UNIVERSAL

# Record File

संस्कृत साहित्य सभा
(M.S.)

File 2

File No. _____

Name _____

Address _____

Subject _____

Email ID _____

# संस्कृत साहित्य सौरभम्

---

लेखकः —
सत्यव्रतशास्त्री

# प्राक्कथन

जनसाधारण में संस्कृतभाषा के विषय में एक धारणा बद्धमूल हो चुकी है और वह यह कि संस्कृत बहुत क्लिष्ट है। संस्कृत के सार्वत्रिक ह्रास की पृष्ठभूमि में इस धारणा का बहुत बड़ा हाथ रहा है। पर यह धारणा कितनी भ्रान्त और निर्मूल है यही सिद्ध करने के हेतु यह हमारा प्रयास है। इसमें हमें कितनी सफलता मिली है यह इस पुस्तिका के पाठक और पाठिकाएं ही बता सकते हैं। इसी कारण बालक संस्कृत से बहुत डर जाता है। यह इस भाषा को बहुत कठिन समझता है। हमारा उद्देश्य इस पुस्तक में यही रहा है कि संस्कृत को कितने सरल रूप में प्रस्तुत किया जाय जिससे कि नन्हें विद्यार्थी भी इसके प्रति आकर्षित हों और इस देवभाषा का परिचय प्राप्त कर सकें।

दिल्ली - वैशाख पूर्णिमा

संस्कृत का तुच्छ सेवक -
सत्यव्रत शास्त्री

ॐ

प्रथमः पाठः

सः पठति ।

तौ पठतः ।

ते पठन्ति ।

सः लिखति ।

तौ लिखतः ।

ते लिखन्ति

सः पठति लिखति च ।

तौ पठतः लिखतः च ।

ते पठन्ति लिखन्ति च ।

२- नये शब्द :— प्रश्नवाचक

सः वह (पुरुष) पठ — पढ़ना

तौ वे दोनों (पुरुष) लिख — लिखना

ते वे सब (पुरुष) च — और

२. समझने के लिये :—

पठति पठतः पठन्ति

लिखति लिखतः लिखन्ति

३. घर का काम :—

संस्कृत में अनुवाद कीजिये :—

वे सब लिखते हैं ।

वह पढ़ता है ।

वे दोनों लिखते हैं ।

वे सब पढ़ते हैं ।

वह लिखता है ।

वे दोनों पढ़ते हैं ।

# प्राक्कथन

जनसाधारण में संस्कृतभाषा के विषय में एक धारणा बद्धमूल हो चुकी है और वह यह कि संस्कृत बहुत क्लिष्ट है। संस्कृत के सार्वत्रिक ह्रास की पृष्ठभूमि में इस धारणा का बहुत बड़ा हाथ रहा है। पर यह धारणा कितनी भ्रान्त और निर्मूल है यही सिद्ध करने के हेतु यह हमारा प्रयास है। इसमें हमें कितनी सफलता मिली है यह इस पुस्तिका के प्रबुद्ध पाठक और प्रबुद्धेतरगण ही बता सकते हैं। इसी कारण का मन्द बालक संस्कृत से बहुत डर जाता है। वह इस भाषा को बहुत कठिन समझता है। हमारा उद्देश्य इस पुस्तक में यही रहा है कि संस्कृत को कितने सरल रूप में प्रस्तुत किया जाय जिससे कि नन्हें विद्यार्थी भी इसके प्रति आकर्षित हों और इस देवभाषा का परिचय प्राप्त कर सकें।

दिल्ली - वैशाख पूर्णिमा

संस्कृत का तुच्छ सेवक -
सत्यव्रत शास्त्री

ॐ

प्रथमः पाठः

स: पठति ।
ता पठत: ।
ते पठन्ति ।

स: लिखति ।
ता लिखत: ।
ते लिखन्ति ।

स: पठति लिखति च ।
ता पठत: लिखत: च ।
ते पठन्ति लिखन्ति च ।

१- नय शब्द :— प्रत्यय
यौगिक
स: वह (पुरुष) पठ — पढ़ना
ता वे दोनों (पुरुष) लिख (यौगिक) — लिखना
ते सब (पुरुष) च (यौगिक) — प्रपा

२. समझने के लिए :—

पठति पठत: पठन्ति
लिखति लिखत: लिखन्ति

३. पर का काम :—
संस्कृत में प्रयोग क्रियापद :—

वे सब लिखते हैं ।
वह पढ़ता है ।
वे दोनों लिखते हैं ।
वे सब पढ़ते हैं ।
वह लिखता है ।
वे दोनों पढ़ते हैं ।

Duplicate

Serial No. 1785

Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY
( SEAL )

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi, Amritsar passed the Matriculation Examination of this University held in March 1958 and was placed in the Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH
12th January 1959.

Sd/----------
ASSISTANT SECRETARY(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

द्वितीयः पाठः

सा पठति ।
ते पठतः ।
ताः पठन्ति ।

सा नमति ।
ते नमतः ।
ताः नमन्ति

सा चलति ।
~~सः~~ उपाध्यायः चलतः ।
~~ताः~~ छात्राः चलन्ति ।
एषा चलति ~~सः~~ न ~~चलति~~ पठति ।
ते चलतः पठतः न ।
ताः न तिष्ठन्ति न च पठन्ति ।

सः नमति । सः न नमति
सः तिष्ठति । सा तिष्ठति ।
सः चलति । ताः न चलन्ति ।

## शब्दार्थाः

१. नपुंसकलिङ्गशब्दाः —
i — वह (लड़का या कन्या) नाम — नमस्कार करना ।
ii — दो दोनों (कन्याएं या स्त्रियां) चल — चलना ।
iii — तीन (कन्याओं या स्त्रियां) उपाध्याय — गुरु ।

२. ~~अधोलिखितानां~~ रिक्तस्थानानां पूर्तिं कुरुत ।
१ ..... पठतः
२ ..... तिष्ठन्ति
३. ताः .....
४. ते ..... चलन्ति न ।
५. ते पठनं ..... ।
६. ताः उपाध्यायं ..... ।

३. अनुवादं कुरुत :—
१. वे तीन (स्त्रियां) नमस्कार करती हैं ।
२. वह (बालक) लिखता है, वह (कन्या) नहीं लिखती ।
३. दो दोनों गाती हैं ।
४. तीन पढ़ते हैं लिखते हैं और नमस्कार ।

Duplicate

Serial No. 1785

Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY
( SEAL )

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi, Amritsar passed the Matriculation Examination of this University held in March 1958 and was placed in the Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH
12th January 1959.

Sd/----------
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

द्वितीयः पाठः

सा पठति ।
ते पठतः ।
ते: पठन्ति ।

सा नमति ।
ते नमतः ।
ते: नमन्ति

सा चलति ।
[illegible]
ते: [illegible]
[illegible] चलतः ।
ते: [illegible] चलन्ति ।

सा लिखति ।
ते लिखतः ।
ते: न लिखन्ति न च पठन्ति ।

[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।

ते: न लिखन्ति ।
ते लिखतः ।
ते: न चलन्ति ।

## १,५ अभ्यासः

१ - नये शब्दः —

सा — वह (स्त्री या कन्या) ..... नम् — नमस्कार करना ।
ते — वे दोनों (कन्याएं या स्त्रियां) चल् — चलना ।
ता — वे (सब (कन्याएं या स्त्रियां) [illegible] — मां ।

२. [illegible] रिक्त स्थानों को पूरी कीजिए ।

१ ..... पठति ।
२ ..... लिखन्ति ।
३. ते ..... ।
४. ते ..... चलन्ति च ।
५. ते पठथः लिखथः ..... ।
६. ता [illegible] ।

और का काम ।

३. [illegible] :—

१. वे सब (स्त्रियां) नमस्कार करती हैं ।
२. वह (बालक) लिखता है, वह (कन्या) नहीं लिखती ।
३. वे दोनों मां चलते हैं ।
४. सब पढ़ते हैं लिखते हैं और नमस्कार करते हैं ।

Duplicate

Serial No. 1785 Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY
( SEAL )

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi, Amritsar passed the Matriculation Examination of this University held in March 1958 and was placed in the Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH
12th January 1959.

Sd/-----------
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

तृतीय: पाठ:

सा पठति ।
ते पठत: ।
ता: पठन्ति ।

सा नमति ।
ते नमत: ।
ता: नमन्ति ।

सा चलति ।
ते ग्रामे चलत: ।
ता: ग्रामे चलन्ति ।

सा चलति ~~[illegible]~~ न ~~चलति~~ पठति ।
ते चलत: पठत: च ।
ता: न लिखन्ति नैव पठन्ति ।

सा नमति । ते: न नमति ।
ते नलिखत: । ता लिखत: ।
ते चलन्ति । ता: न चलन्ति ।

अभ्यास:

१ - वर्ण शब्द :—
सा – वह (स्त्री या कन्या) ... नम् – नमस्कार करना ।
ते – वे दोनों (कन्याएं या स्त्रियां) चल् – चलना ।
ता – वे (सब (कन्याएं या स्त्रियां) ग्रामे – गांव ।
२. ~~[illegible]~~ दिये हुए शब्दों को पूरे कीजिए ...
१ ..... पठत: ४. ते ..... चलन्ति च ।
२ ..... लिखन्ति ५. ते पठत: लिखत: ... ।
३. सा ..... ६. ता ग्रामे ... ।
और का काम
३. ~~[illegible]~~ का अर्थ :—
१. वे सब (स्त्रियां) नमस्कार करती हैं ।
२. वह (बालक) लिखता है, वह (कन्या) नहीं लिखती ।
३. वे दोनों गांव जाती हैं ।
४. सब पढ़ते हैं लिखते हैं और नमस्कार करते हैं ।

Duplicate

Serial No. 1785 Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY
( SEAL )

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi, Amritsar passed the Matriculation Examination of this University held in March 1958 and was placed in the Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH
12th January 1959.

Sd/----------
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

S.No..59069

Roll No. 80069

(ST/L)

PANJAB UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES

MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Bell Ram

| S.NO. | Subjects | Marks obtained | Maximum Marks |
|---|---|---|---|
| 1. | English | 126 | 200 |
| 2. | Mathematics or Arithmetic & Household Accounts | 130 | 200 |
| 3. | i) History | 45 | 90 |
| | ii) Geography | 27 | 60 |
| 4. | Science | 64 | 150 |
| 5. | Hindi | 92 | 150 |
| | Total | 484 | |

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH
May 16,1958.

sd/---J.R.AGNIHOTRI
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

S.No..59059

Roll No. 80069

(SP/L)

PANJAB UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES

MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

| S.NO. | Subjects | Marks obtained | Maximum Marks |
|---|---|---|---|
| 1. | English | 126 | 200 |
| 2. | Mathematics or Arithmetic & Household Accounts | 130 | 200 |
| 3. | i) History | 45 | 90 |
| | ii) Geography | 27 | 60 |
| 4. | Science | 64 | 150 |
| 5. | Hindi | 92 | 150 |
| | Total | 484 | |

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH
May 16,1958.

sd/---J.R.AGNIHOTRI
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SW/L

DATED . .1959.

S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES

MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

| S.NO. | Subjects | Marks obtained | Maximum Marks |
|---|---|---|---|
| 1. | English | 126 | 200 |
| 2. | Mathematics or Arithmetic & Household Accounts | 130 | 200 |
| 3. | i) History | 45 | 90 |
| | ii) Geography | 27 | 60 |
| 4. | Science | 64 | 150 |
| 5. | Hindi | 92 | 150 |
| | Total | 484 | |

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH
May 16,1958.

sd/---J.R.AGNIHOTRI
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

परिचय : पाठ :

(कर्ता).

बालः धावति ।
बालौ धावतः ।
बालाः धावन्ति ।

ब्राह्मणः नदति ।
शिक्षकः पठति ।
नदी चलति ।
पत्रम् पतति ।
मेघाः गर्जन्ति ।
छात्राः नमन्ति ।

जलम् पतति ।
जले पततः ।
जलानि पतन्ति ।

जलम् बहति ।
सूर्यः उदेति ।
लक्ष्यम् विध्यति ।
नेत्रे स्फुरतः ।
मित्रे हसतः ।
कमलानि विकसन्ति ।
पक्षिणः पतन्ति ।

अभ्यासः

१. वर्ण शब्दः —

| | | | |
|---|---|---|---|
| बाल | बालक | धाव | दौड़ना |
| गुरु | गुरुत्व | विद्यालय | जाना |
| घोड़ा | घोड़ा | स्फुर | फड़कना |
| जल | बादल | विकस | खिलना |
| शिक्षक | पढ़ना | पत | गिरना |

२. रिक्तस्थानानि पूरयत :—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बालः | बालौ | बालाः | जलम् | जले | जलानि |
| पत्रम् | पत्रे | पत्राणि | कमलम् | कमले | कमलानि |
| मेघः | मेघौ | मेघाः | पक्षिणम् | पक्षिणौ | पक्षिणः |

३. वाक्यानि लिखत :

(क) अधोलिखितानां क्रियापदानां कर्तृपदानि लिखत :— १. बालकः पठति । २. दो घोड़े दौड़ते हैं, ३. शिक्षकः पढ़ते हैं । ४. दो मुखम् हसतः हैं, ५. पक्षिणः गायन्ति हैं, ६. पक्षिणः उड़न्ति हैं ।

(ख) वाक्येषु क्रियापदानि चित्वा लिखत :—

१. पत्रम् : पतति, २. पक्षिणः पतन्ति, ३. शिक्षकः पठति, ४. नदी वहति ।

S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES

MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

| S.NO. | Subjects | Marks obtained | Maximum Marks |
|---|---|---|---|
| 1. | English | 126 | 200 |
| 2. | Mathematics or Arithmetic & Household Accounts | 130 | 200 |
| 3. | i) History | 45 | 90 |
| | ii) Geography | 27 | 60 |
| 4. | Science | 64 | 150 |
| 5. | Hindi | 92 | 150 |
| | Total | 484 | |

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH
May 16,1958.

sd/---J.R.AGNIHOTRI
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

परम्म : पाठ :

(कर्ता).

बालः धावति ।
बालौ धावतः ।
बालाः धावन्ति ।

ब्राह्मणः पठति ।
शिक्षकः पठति ।
नरौ चलतः ।
नद्यौ धावतः ।
मेघाः गर्जन्ति ।
छात्राः नमन्ति ।

फलम् पतति ।
फले पततः ।
[illegible] पतन्ति ।

जलम् बहति ।
[illegible] ।
लक्ष्यम् जयति ।
नेत्रे स्फुरतः ।
मित्रे हसतः ।
कमलानि विकसन्ति ।
पक्षिणौ पतन्ति

## पुरुषाः

१. क्रमशः शब्दं : —

| | |
|---|---|
| बालः — बालकः | धावः — दौड़ना |
| नरः — मनुष्य | (जि) जयः — जीतना |
| अश्वः — घोड़ा | स्फुरः — फड़कना |
| नेत्रम् — आँख | विकसः — खिलना |
| शिक्षकः — गुरु | पतः — गिरना |

२. लिङ्गानुसारं क्रमशः :—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नरः | नरौ | नराः | फलम् | फले | फलानि |
| अश्वः | अश्वौ | अश्वाः | कमलम् | कमले | कमलानि |
| मेघः | मेघौ | मेघाः | पक्षिणम् | पक्षिणौ | पक्षिणः |

३. वाक्य का कोष्ठ :

(क) पूर्णवाक्य कौन-से हैं : — १. बालक जाता है । २. दो घोड़े दौड़ते हैं, ३. शिक्षक पढ़ते हैं ४ दो मनुष्य हँसते हैं, ५. मित्र जीता है, ६. पक्षी उड़ता है।

(ख) वाक्यों को शुद्ध कर के लिखिए :—

१. पुरुषः धावति, २. पक्षिणौ पतन्ति, ३. शिक्षकः पठन्ति, ४. नरौ हसन्ति।

From:-

The Headmaster,
B.K. HIGH SCHOOL,
(Ghee Mandi)Amritsar.

Dated May 20,1958.

CERTIFIED that Pritam Dass Roll No. 80069 son of Shri Beli Ram matriculated from this school in the year 1958. He secured 484 marks and was placed in the Second Division. He was obedient, respectful and well-behaved. He was a good student and never gave me any chance for complaint. He bore a good moral conduct and character.

He took an active part in games and other extra-mural activities of the school. He comes of a respectable family and his date of birth as per this school record is First October, One Thousand nine hundred and forty (1-10-1940)

Wherever he goes, he carries my good wishes with him.

Sd/---Dev Raj,
Headmaster,
B.K. HIGH SCHOOL,
Ghee Mandi,Amritsar.

Attested to be a true copy

Signature

Seal

Dated . .1959.

# षष्ठम:

## ~~सप्तम~~: पाठ:

### करण

खञ्ज: पादेन चलति ।

मनुष्य: पादाभ्याम् चलति ।

अश्व: पाद: चलति ।

बाल: हस्तेन पत्रम् लिखति ।

नर: कर्णाभ्याम् शब्दम् शृणोति ।

गज: दन्त: भोजनम् चबति ।

वयम् नेत्राभ्याम् पश्याम: ।

जलेन जीवनम् भवति ।

जीवा: अन्नेन जीवन्ति ।

यूयम् कर्णाभ्याम् शृणुथ ।

मनुष्या: मुखेन वदन्ति स्वादन्ति च ।

[illegible] गोपाल: नेत्रेण किम: पश्यति ?

[illegible] कर्णाभ्याम् बाधिर: अपि शृणोति ।

कृषक: दात्रेण केदारम् लुनाति ।

वृक्षम् हस्तेन क्षेत्रम् कर्षन: ।

[illegible] ग्रामम् गच्छति ।

[illegible] विद्यालयम् गच्छन्ति ।

[illegible] प्रकाश: भवति ।

### शब्दार्थ:

1. [illegible] खञ्ज: – लंगड़ा  कृषक: – किसान
[illegible] – गौ  वृक्षम् – वृक्ष
नर: – मनुष्य  ग्राम – गाँव
आधार – आधार  वृक्ष – काटना
शृणोति – सुनता है  शृणोति – सुनता है

2. [illegible] के रूप :–

| | | |
|---|---|---|
| बालेन | बालाभ्याम् | बालै: |
| रामेण | रामाभ्याम् | रामै: |
| बालरेण | बालराभ्याम् | बालरै: |
| फलेन | फलाभ्याम् | फलै: |

3. [illegible] के रूप :–

शुद्धवाक्य करो :– 1. वयम् मनुष्य: द्वौ पादौ [illegible] चलन्ति स्म ।

2. कीटा: [illegible] मनुष्य: शृणोति का नेत्र [illegible] ।

3. [illegible] गोपाल: [illegible] का नेत्र [illegible] ।

4. राम: एक हाथ [illegible] स्नान [illegible] मारन दानों हाथ [illegible] ।

5. [illegible]

# अष्टमः पाठः

## सम्प्रदान

नृपः ब्राह्मणाय धनम् यच्छति ।
नृपः ब्राह्मणाभ्याम् धनम् यच्छति ।
नृपः ब्राह्मणेभ्यः धनम् यच्छति ।
धनम् दानाय परोपकाराय च भवति ।
याचकाः याचकेभ्यः अन्नम् यच्छन्ति ।
छात्राः ज्ञानाय विद्यालयम् गच्छन्ति ।
आवां मोदनाय भोजनालयम् आवहतः ।
अहम् जलाय कूपम् गच्छामि ।
कृषकः वृषभाभ्याम् धान्यम् ददाति ।
जनकः पुत्राभ्याम् पुस्तकं ददाति ।
सज्जनाः परोपकाराय एव जीवन्ति ।
हिरण्यम् कुण्डलाय भवति ।
गृहस्थः काकेभ्यः बलिम् यच्छति ।
परमेश्वराय नमः । शिक्षकेभ्यः स्पर्धते ।
इन्द्राय स्वाहा । मलम् मलाय पतति ।

### शब्दार्थाः

१. कर्म शब्द :— परोपकार - दूसरों की भलाई
धनम् - रुपया
कूपम् - कुआँ
हिरण्यम् - सोना
कुण्डलम् - कान का आभूषण
पतति - गिरता है
स्वाहा - देवताओं का भोजन
दा (यच्छ) - देना
जीव् - जीना

२. [illegible] :—

| | | |
|---|---|---|
| रामाय | रामाभ्याम् | रामेभ्यः |
| बालाय | बालाभ्याम् | बालेभ्यः |
| याचकाय | याचकाभ्याम् | याचकेभ्यः |

३. वाक्य का काम :—

(क) सत्य वाक्यांश :— आवाभ्याम्, जलाय, धनम्, नमः, स्वाहा ।

(ख) अशुद्ध वाक्यांश :— १. वह सदा परोपकार के लिये जीता है ।
२. हम भोजन के लिये गुरुजी को जाते हैं । ३. नाकर घोड़ों के लिये घास लाता है । ४. पिता दो पुत्रों के लिये पुस्तक देता है ।
५. चीनी लोग निर्धनों को भोजन देते हैं ।

नवम: पाठ:

ग्रुपपादान

वृक्षात् ~~फलम्~~ फलानि पतन्ति ।
वृक्षाभ्याम् फलानि पतन्ति ।
वृक्षेभ्य: फलानि पतन्ति ।
बालका: ग्रामात् विद्यालयम् गच्छन्ति ।
ग्रुपनगरात् ग्रुपनगराभ्याम् यात: ।
छात्रा: क्रीडनाय नगरात् बहि: यान्ति ।
ग्रुपहम् ग्रुपत्र पठनाय दूरात् ग्रुपागच्छामि ।
यूयम् भोजनाय ग्रामात् कुत्र गच्छथ: ।
लोका: ग्रामेभ्य: तत्र हसनाय गच्छन्ति ।
नगरेभ्य: ग्रुपि जना: यात: ~~यं~~ तत्र गच्छन्ति ।
ग्रुपरक्षका: लोकान् चौरेभ्य: रक्षन्ति ।
किम् दासा: कूपात् जलम् न मानयन्ति ।
हिमालयात् नदा: ग्रुपसवन्ति ।
ग्रामयात् वृश्चका: भवन्ति ।
नृप: प्रासादात् लोकान् पश्यति
~~रात्र~~ चैत्रात् पूर्वं = फाल्गुन: भवति
पथिका: ग्रामात् ग्रामम् गच्छन्ति ।

ग्रुपसर्ग

२. नये शब्द :- ग्रुपनगरात् = बड़ा नगर से — ग्रामेभ्य = गाँव
क्रीडन - खेल — वृश्चक - बिच्छू
ग्रुपरक्षक - सिपाही — प्रासाद - महल
नद - बड़ी नदी — ग्रुपसवन्ति - उत्पन्न होना

२. समान क्रिया :- वृक्षात् वृक्षाभ्याम् वृक्षेभ्य:
ग्रुपनगरात् ग्रुपनगराभ्याम् ग्रुपनगरेभ्य:
ग्रामात् ग्रामाभ्याम् ग्रामेभ्य:

३. ~~अ~~ अनुवाद :- (क) दिये हुये शब्दों को पूर्ति कीजिये :- १. ग्रुपनगरात् ---- पतति । २. वृक्षेभ्य: फलानि ---- न पतन्ति । ३. किम् ~~दास~~: ---- जलम् न ग्रुपसवन्ति ? ४. ---- वृश्चका भवन्ति । ५. वयम् ---- नगरम् गच्छाम: ।

(ख) ग्रुपरक्षक कीजिये :- सिपाही लोगों की चोरों से रक्षा करते हैं । फाल्गुन चैत्र से पहिले आता है । छात्र पढ़ने के लिये दूर से यहाँ आते हैं । ग्राम बाहर विद्यालय है । भोजनालय छात्रावास से दूर नहीं है ।

दशम: पाठ:

सम्बन्ध

~~काकस्य वर्ण: कृष्ण: भवति।~~

काकस्य: वर्ण: कृष्ण: भवति।

काकानाम् वर्ण: कृष्ण: भवति।

शुकानाम् वर्ण: हरित: भवति।

बकानाम् वर्ण: श्वेत: भवति।

मयूरस्य वर्ण: नील: भवति।

पारावतस्य वर्ण: धूम्र: भवति।

कूपस्य जलम् मधुरम् भवति।

समुद्रस्य जलम् क्षारम् भवति।

~~वृक्षस्य शाखा: लोकान् रक्षन्ति।~~

आदिवासिनाम् चौरस्य: भयम् भवति।

सज्जनानाम् दुर्जनस्य: भयम् भवति

वृक्षस्य शाखा: लोकान् रक्षन्ति।

हस्तयो: दश नखा: भवन्ति।

भारतम् वर्षम् कृषकाणाम् देश: अस्ति।

आवेका: फलानाम् रसम् पिबन्ति।

विहगा: कूपस्य शीतलम् जलम् पिबन्ति।

~~की~~ पिकानाम् जातानि मधुराणि भवन्ति।

कार्पासस्य पक्वा: कोमला भवत:।

संसारस्य जनक: परमेश्वर: अस्ति।

अस्ति

2. वर्णसम्बद्ध:— काक: — श्यामा कृष्ण: — काला

शुक: — तोता हरित: — हरा

बक: — बगुला नील: — नीला

कपोत: — कबूतर पीत: — पीला

पिक: — कोयल क्षार: — खारा

2. लिङ्गसम्बन्ध: —

| | | |
|---|---|---|
| काकस्य | काकयो: | काकानाम् |
| रामस्य | रामयो: | रामाणाम् |
| बालस्य | बालयो: | बालानाम् |

3. पद का काम :— (क) रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिये :—

1. .... वर्ण: हरित: भवति। 2. चटिकाया: .... रसम् ....

3. पिकानाम् .... मधुराणि भवन्ति। 4. सज्जनानाम् ..... मयम् ——।

4. हस्तयो: .... नखा: भवन्ति।

(ख) 1. इस दो कूपों का ठंडा जल पीते हैं। 2. राम की पिता भोजन खाता है।

3. पक्षियों का रंग भूरा होता है। 4. ~~मयूर~~ का रंग काला नहीं होता है।

5. क्या दोनों कौवों का रंग काला नहीं है?

दशम: पाठ:

सम्बन्ध

काकस्य वर्ण: कृष्ण: भवति ।
काकयो: वर्ण: कृष्ण: भवति ।
काकानाम् वर्ण: कृष्ण: भवति ।
शुकानाम् वर्ण: हरित: भवति ।
बकानाम् वर्ण: श्वेत: भवति ।
मयूरस्य वर्ण: नील: भवति ।
शुकस्य वर्ण: पीत: भवति ।
कूपस्य जलम् मधुरम् भवति ।
समुद्रस्य जलम् क्षारम् भवति ।
~~बालस्य रोदनम् लोकान् रुदन्ति ।~~
भीतिकानाम् चीत्कार: श्रमम् भवति ।
सज्जनानाम् दुर्जनस्य: श्रमम् भवति
नृपस्य सैनिका: लोकान् रक्षन्ति ।
हस्तयो: दश नखा: भवन्ति ।
भारतम् वर्षम् कृषकाणाम् देश: अस्ति ।
~~बालका: बालानाम् रोदनम् पिबन्ति ।~~
निम्बस: कूपस्य शीतलम् जलम् पिबन्ति ।
पिकानाम् जातानि मधुराणि भवन्ति ।
कपोतस्य पक्षौ कोमलौ भवत: ।
लंगूरस्य जनक: परमेश्वर: अस्ति ।
अस्मभ्यम्

2. नर्मशब्द:— काक: — कौवा कृष्णा: — काला
शुक: — तोता हरित: — हरा
बक: — बगुला नील: — नीला
कपोत: — कबूतर पीत: — पीला
पिक: — कोयल क्षारम् — खारा अस्ति — है

2. लक्षण के अनुसार :-
काकस्य काकयो: काकानाम्
रामस्य रामयो: रामाणाम्
बालस्य बालयो: बालानाम्

3. घर का काम :- (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :-
1. .... वर्ण: हरित: भवति । 2. चीनिका: .... रसम् ....
3. पिकानाम् .... मधुराणि भवन्ति । 4. लज्जानाम् ..... श्रमम् ....
4. हस्तयो: .... नखा: भवन्ति ।

(ख) 1. इन दो फूलों का ठंडा जल पीते हैं । 2. राम का पिता भोजन खाता है ।
3. पक्षी का रंग गोरा होता है । 4. कबूतर का रंग काला नहीं होता है ।
5. क्या दोनों कौवों का रंग काला नहीं है ?

फलानि वृक्षे सन्ति ।
फलानि वृक्षयोः सन्ति ।
फलानि वृक्षेषु सन्ति ।

शुकः पञ्जरके अस्ति ।
शुकौ पञ्जरकयोः स्तः ।
शुकाः पञ्जरकेषु सन्ति ।

वने सिंहाः वसन्ति । मृगाः अपि तत्र वसन्ति । मीनाः नदेषु वसन्ति । गोदोहः कमलायाः तटम् शोभते । वसन्ते पुष्पाणि विकसन्ति । पुष्पेषु मधुरम् रसम् भ्रमराः पिबन्ति । चातकाः शीतम् हिमजलम् पिबन्ति । [illegible] रसम् पिबन्ति । मम हस्तयोः पुस्तके स्तः । किम् तव नयनयोः तृणानि सन्ति ?

सूर्यः आकाशे भ्रमति । चन्द्रः अपि आकाशे भ्रमति । [illegible] जलम् पिबन्ति । मनुष्याः गृहेषु वसन्ति, [illegible] सर्पाः च बिलेषु । दुग्धे घृतम् भवति । [illegible] अस्ति ।

अभ्यास

१. वर्ण शब्दः — पञ्जरक - पिंजरा  गृह - घोंसला
मीन - मछली  स्तः - (वे दो) हैं
हिम - बर्फ़  सन्ति - (वे सब) हैं
इक्षुदण्ड - गन्ना  विकसन्ति - खिलना

२. निम्नयोः के लिंगे :— वृक्ष  वृक्षयोः  वृक्षेषु
नर  नरयोः  नरेषु
फल  फलयोः  फलेषु

३. शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :—
विद्यालय, गोदोह, विकसन्ति, हिमजलम्, हस्तयोः ।

(ख) पुरुष के लिंग :—
१. शिव हिमालय पर रहता है । २. क्या पक्षी घोंसलों में नहीं रहते ? ३. मेरे पिताजी अम्बाला नगर में रहते हैं । ४. पंजाब प्रदेश के लोग परिश्रमी हैं । ५. [illegible] पाठक लड़के पढ़ते हैं । ग्रामों में लोग सज्जन होते हैं ।

एकादशः पाठः

## अभ्यासः

फलानि वृक्षे सन्ति ।
फलानि वृक्षयोः सन्ति ।
फलानि वृक्षेषु सन्ति ।

शुकः पञ्जरके अस्ति ।
शुकौ पञ्जरकयोः स्तः ।
शुकाः पञ्जरकेषु सन्ति ।

वने सिंहाः वसन्ति । मृगाः अपि तत्र वसन्ति । मीनाः तडागेषु वसन्ति । कूपानाम् जलम् शीतलम् भवति । तटाकानाम् जलम् शीतलं न भवति । वसन्ते पुष्पाणि विकसन्ति । पुष्पेषु मधुरम् रसम् भ्रमराः पिबन्ति । चातकाः केवलम् हिमजलम् पिबन्ति । [illegible] रसम् पिबन्ति । मम हस्तयोः पुस्तके स्तः । किम् तव नयनयोः तृणानि सन्ति ?

सूर्यः आकाशे भ्रमति । चन्द्रः अपि आकाशे भ्रमति । मृगाः तटाकस्य तटे जलम् पिबन्ति । मनुष्याः गृहेषु वसन्ति, खगाः नीडेषु, सर्पाः च बिलेषु । दुग्धे घृतम् भवति । [illegible]

### अभ्यास

१. [illegible]
[illegible] - [illegible]
[illegible] - [illegible]
[illegible] - [illegible]
[illegible] - [illegible]

नीड - घोंसला
स्तः - (बहु०) हैं।
सन्ति - (बहु०) हैं
विकसन्ति - खिलना

२. [illegible] के रूप :—

| | | |
|---|---|---|
| वृक्ष | वृक्षयोः | वृक्षेषु |
| नर | नरयोः | नरेषु |
| फल | फलयोः | फलेषु |

३. घर का काम :— (क) शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
विकसन्ति, जीवन्ति, विकसन्ति, हिमजलम्, हस्तयोः ।
(ख) पुनरावृत्ति कीजिए :—
१. शिव हिमालय पर रहते हैं। २. क्या पक्षी घोंसलों में नहीं रहते ? ३. मेरे पिताजी अम्बाला नगर में रहते हैं। ४. पञ्जाब प्रदेश के लोग परिश्रमी होते हैं। ५. [illegible] पथिक सड़क पर चलते हैं। ग्रामों में लोग सज्जन होते हैं।

एकादश: पाठ:

अभ्यास

फलानि वृक्षे सन्ति ।
फलानि वृक्षयो: सन्ति ।
फलानि वृक्षेषु सन्ति ।

शुक: पञ्जरके अस्ति ।
शुकौ पञ्जरकयो: स्त: ।
शुका: पञ्जरकेषु सन्ति ।

वने सिंहा: वसन्ति । मृगा: अपि तत्र वसन्ति । नद्य: नदेषु वहन्ति । ग्रीष्मे कृषकाणां जलम् शीतलम् भवति । तटाकानाम् जलम् शिशिरे अपि शीतलम् भवति । वसन्ते पुष्पाणि विकसन्ति । पुष्पेषु मधुरम् रसम् भ्रमरा: पिबन्ति । चातका: ग्रीष्मे हिमजलम् पिबन्ति । [illegible] जलम् रसम् पिबन्ति । मम हस्तयो: पुस्तके स्त: । किम् तव नयनयो: तृणानि सन्ति ?

सूर्य: आकाशे भ्रमति । चन्द्र: अपि आकाशे भ्रमति । गाव: तटाकस्य तटे जलम् पिबन्ति । मनुष्या: गृहेषु वसन्ति, [illegible] रक्षका: गेहेषु, सर्पा: च बिलेषु । दुग्धे घृतम् भवति । कालेयुगे सर्वे बलम् प्राप्नुवन्ति ।

अभ्यास

१. [illegible] तालाब - पोखरा
[illegible] - मेघ
[illegible] - अग्नि
[illegible] - जल
नीड - घोंसला
स्त: - (वे दो) हैं
सन्ति - (वे तीन) हैं
विकसन्ति - खिलना

२. (क) [illegible] के रूप :-

| | | |
|---|---|---|
| वृक्ष | वृक्षयो: | वृक्षेषु |
| नर | नरयो: | नरेषु |
| फल | फलयो: | फलेषु |

३. पद का नाम :- (क) शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिये :-
विकसन्ति, ग्रीष्मे, विकसन्ति, हिमजलम्, हस्तयो: ।

(ख) अनुवाद कीजिये :-
१. शिव हिमालय पर रहता है । २. क्या पक्षी घोंसलों में नहीं रहते ? ३. मेरे पिताजी अम्बाला नगर में रहते हैं । ४. परजाबपदेश के लोग तलवार में प्रसिद्ध हैं । ५. पथिक सड़क पर चलते हैं । ग्रामों में लोग सज्जन होते हैं ।

द्वादशः पाठः

(सम्भाषणम्, पत्रम्)

श्यामः

मोहनः — हे राम! तव विद्यालयः कुत्र अस्ति?

रामः — मित्र श्याम! मम विद्यालयः ग्रामे अस्ति। अहम् तत्र प्रतिदिनम् पठनाय गच्छामि। मम सहोदरः अपि तत्र एव पठति यत्र अहम् पठामि।

श्यामः — भो राम! त्वम् ~~कथम्~~ विद्यालयम् कथम् गच्छसि? पादाभ्याम् यासि वा?

रामः — हे श्याम! यथा त्वम् पादाभ्याम् एव विद्यालयम् गच्छसि, तथा एव अहम् अपि पादाभ्याम् एव विद्यालयम् गच्छामि। परन्तु ~~मम~~ ~~सहोदरः~~ यासि एव विद्यालयम् गच्छामि। भो श्याम! त्वम् कदा विद्यालयम् गच्छसि?

श्यामः — मित्र! अहम् प्रातः विद्यालयं गच्छामि। मध्याह्ने यदा घण्टानादः भवति तदा अहम् गृहम् प्रति आगच्छामि। अहम् पत्रम् ~~पठनस्थलम्~~ विद्यालयम् एव गच्छामि।

(पश्चात् रामदत्तः श्यामदत्तः च अपि आगच्छन्ति)।

रामः श्यामः च — हे वाता! त्वम् मूकम् विद्यालयम् कथम् गच्छसि?

वाता — भो वाताः! वयम् पत्रम् विद्यालयं ~~गच्छामः~~ गच्छामः। अस्माकम् विद्यालये पत्रम् प्रयुक्तम्। वयम् तु कोऽपि कोऽपि क्षेत्रम् गच्छामः।

※ P.T.O.

पत्रम्

१. रेखाङ्कितपदानां प्रश्नवाचकपदानि लिखत:—

| | |
|---|---|
| कुत्र - कुत्र | कदा - कदा |
| यत्र - यत्र | यदा - यदा |
| तत्र - तत्र | तदा - तदा |
| कथं - कथं | पत्रम् - पत्रम् |
| यथा - यथा | पत्रे - पत्रे |
| तथा - तथा | अस्माकम् - अस्माकम् |
| | मध्याह्ने - मध्याह्ने |

२. सम्बोधनपदानि रेखाङ्कितानि कुरुत:

हे राम! हे रामौ! हे रामाः!
भो वाते! भो वाते! भो वाताः!

३. यथा क्रमम् उत्तराणि लिखत:— (क) नायकः कं प्रति प्रोक्तवान्:— पत्रम्, कथम्, तदा, यत्र, कुत्र, पत्रम् च।

(ख) पत्रम् कीदृशं वर्तते:— अस्माकं विद्यालये पत्रम् प्रयुक्तं भवति। वयं तु कोऽपि कोऽपि क्षेत्रम् गच्छामः। पत्रे पत्रे वयं वार्तालापं कुर्मः। पत्रम् पत्रम् वयं पठामः। अतः पत्रम् अस्माकं मित्रम् अस्ति।

अस्मात् वा मेघ वा इमा वा अन्न वा
आत्म च मन च प्राणाश्रम प्रोत्क्रमते।
तस्मात् वा तेज वा तथा वा रेतो वा एव
रेत्म च मन च विज्ञानाद् ओं॥

# अभ्यास: पाठ:

## लोट् लकार

राम: पाठम् पठतु ।
सा पत्रम् लिखतु
माहन: शीघ्रम् च ग्रामम् गच्छतु ।
तौ पाठम् पठताम् पत्रे च लिखताम् ।
गुरव: घासम् खादन्तु वृक्षा: च जलम् पिबन्तु ।
ता: विद्यालयम् गच्छन्तु पाठम् च स्मरन्तु ।
सत्यम् वद, धर्मम् चर, पाठम् लिख ।
युवाम् गृहम् गच्छतम् जनकम् च नमतम् ।
यूयम् अत्र आगच्छत उपदेशम् च आकर्णयत ।
हे चोरा: ! यूयम् धान्यम् न हरत ।
हे छात्रा: ! यूयम् कदा अपि असत्यम् न वदत ।
अहम् अद्य गृहम् गच्छानि, पाठम्
गुरुवर ! किम् अहम् अन्त: आगच्छानि ?
आवाम् भोजनम् खादाव ?
किम् वयम् अपि चित्रम् पश्याम ?
ते: सरवन् वदन्तु मद्वाणी च शृण्वन्तु ।
देशस्य नागरिका: धार्मिका: भवन्तु ।
यूयम् [illegible] न त्यजत ।

१. [illegible]

| | | | |
|---|---|---|---|
| [illegible] | जनम् | (हृ) हर् | चुराना |
| [illegible] | गृह | (क्षि) क्षिप् | फेंकना |
| अन्तः | अन्दर | वा | या |
| अद्य | आजकल | | |

२. [illegible]

| | | |
|---|---|---|
| पठतु | पठताम् | पठन्तु |
| पठ | पठतम् | पठत |
| पठानि | पठाव | पठाम |

३. घर को कोष्ठक में दिए गए शब्दों से भरिए :- हे बालको ! प्रातः विद्यालय जाओ ।
२. तोता के लिए लाल फल है । ३. बन्दर वृक्षों पर बड़ा प्यार
करता है । ४. शेर वन में गर्जन और मोर नाचते । ५. क्या हम
सबको नमस्कार करें ।
(ख) [illegible]
१- किम् अहम् पठम् पठानि ?
२ युवाम् गृहम् गच्छत ३. ते: असत्यम् न वदताम् ।

पुनर्दृश्य : पाठ :

कन्या

तमा : गृहम् पठशालायाः दूरे न अस्ति ।

( ~~अकारान्त स्त्रीलिङ्ग~~ )

दूरे कन्ये स्तः । एका कमला अस्ति द्वितीया च विमला । उभे प्रातःकाले कन्याभिः सह पाठशालां गच्छतः । तत्र पाठशालायाम् कन्याः वृक्षाणाम् छायायां निजपाठान् स्मरन्ति । तत्पश्चात् कमला विमला च क्रीडाङ्गणम् गच्छतः । तत्र खेलतः चिरतः च । ~~क्रीडाङ्गणे~~ ~~कमला~~ ~~विमला~~ ~~गच्छन्ति~~ । तत्र बालिकाः शीघ्रं क्रीडया सह क्रीडाङ्गणम् परधावन्ति । क्रीडया सह क्रीडाङ्गणम् ~~गच्छन्ति~~ ।

~~कमला~~ बालिकाः उद्याने गच्छन्ति । उद्याने ~~कमला~~ विमला मालाम् ~~कुर्वन्ति~~ । उद्याने ~~कुलक्याया~~ ~~कमला~~ शीघ्रं सञ्चरन्ति च पतन्ति । कन्याः जलस्य धारायाम् न प्रविशन्ति । ताः ~~सरितः~~ लतासु भ्रमरान् पश्यन्ति । यदा शुष्काणि पत्राणि सरितायाम् पतन्ति तदा ताः प्रसीदन्ति । ~~कमला~~ ~~कमला~~ ~~कमला~~ ~~कमला~~ । ~~कमला~~ बालिकाः । ~~कमला~~ ~~कमला~~ ~~कमला~~ ~~कमला~~ ।

शब्दार्थाः

1. नाम शब्दः :- उद्यान - बाग़ पतित - गिरा हुआ
उद्याने - बाग़ में स्पृश - छूना
कुलक्याया: - ~~कमला~~ नहर प्रविशन्ति - प्रवेश करना
भ्रमरः - भौंरा उद्यानस्य - बाग़ के

2. लतासु के विषये :- लता ~~शब्द~~ (आकारान्त स्त्रीलिङ्ग) के रूप व्याकरण पाठशाला में दीजिये ।

3. घर का काम :— कौन वाक्यों में प्रयोग कीजिये :-

उद्यानम्, लतासु, पाठशालाम्, कन्याभिः, उद्याने ।

(ख) पढ़कर कीजिये :— 1. उद्याने सरितः कमला विमला च सन्ति ।
2. बालिके पुष्पाणि ~~कमला~~ लतायां च विषये च पठतः ।
3. उद्याने सर्वाः बालिकाः मिलित्वा गायन्ति । 4. राम लतां के विषये पुष्पाणि को लाता है । 5. सब कन्याएं पाठशाला को जाएं, पाठ को पढ़ें ।

## दिवाऽऽगण

निशायां नभसि तारकाः दीव्यन्ति । ईश्वरेच्छया कृषकाः पुरःस्थानि वस्तूनि पश्यन्ति चक्षुभ्यां च शाम्यति । तस्मिन् वने मधुराः फूत्कुर्वन्ति । गीतायां सत्यस्वरूपाणां ज्ञानं शक्यते । जनकः पुत्रयोः कुप्यति । चाणक्यः नन्दान्, दुर्जनान् दुर्जनेभ्यः नक्षयति । कन्ये वस्त्राणि सीव्यतः । जलं गीतायां शुद्ध्यति, मनः सत्येन शुद्ध्यति । मूर्खाः दक्षान् न क्षाम्यन्ति, मूर्खम् कार्यकालं न मुह्यति । (N. Pass.) प्राणेश्वरि, उत्थानं ग्रामस्य नगरस्य शोभां च पश्यामः । उषायां शर्मः कामः नक्षति । वयं न कदापि दुःखस्य पारं यामः । हे पुत्र ! त्वं न कदापि लुभ्य, लोभः दुःखस्य कारणं भवति । किं यूयं पापात् क्षाम्यथ ? हे राम ! प्रजानां दुःखानि नश्यन्ति, प्रजाः च नक्षन्ति । किं पुत्राः सीतायाः तेऽ ग्रामं यान्ति ?

१. धातु रूप :-

| | | |
|---|---|---|
| दिव् (दीव्) - चमकना | नक्ष् - प्राप्त करना | |
| कृष् - नष्ट होना | क्षम् (क्षाम्) - क्षमा करना | |
| शम् (शाम्) शान्त होना | पुष् - लाभ करना | |
| शुध् शुद्ध करना | | |

२. लिङ्ग के लिये :-

| | | | |
|---|---|---|---|
| दीव्यति | | दीव्यतः | दीव्यन्ति |
| दीव्यसि | | दीव्यथः | दीव्यथ |
| दीव्यामि | | दीव्यावः | दीव्यामः |

३. घर का काम :-

(क). रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :-

१. निशायाम् तारकाः ..... । २. सज्जनाः दुर्जनेभ्यः ..... । ३. पिता ..... शुद्ध्यति । ४. मनः ..... शुद्ध्यति । ५. मूर्खाः ..... न क्षाम्यन्ति ।

(ख). अनुवाद कीजिये :-

१. तुम सदा कहाँ घूमते हो ? २. मैं उषा की शोभा को देख कर प्रसन्न होता हूँ । ३. तू हरदीन प्रसन्न नहीं होती । ४. हे भाइयो ! अच्छा घर काम न करो । ५. तीर रात को चमकते हैं, प्रातः काल नष्ट हो जाते हैं ।

# दिवाऽऽगणे

विद्यालये एकाकारे तारकाः दीव्यन्ति । इश्वरदत्तः कृपणः दुःखानि न अनुभवति । तस्मिन् वने मयूराः नृत्यन्ति । ग्रीष्मे सरोवराणाम् जलम् शुष्यति । जनकः पुत्रभ्यः रुष्यति । चौरेभ्यः त्रस्यन्ति, सज्जनाः दुर्जनेभ्यः बिभ्यति । कन्या वस्त्राणि सीव्यति । जलं गच्छत् गजः सत्येन शपते । नृपाः दुष्टान् न क्षमन्ते । मूर्खम् कार्यकर्ता न मुह्यति । एकाग्रचित्ताः छात्राः पाठेषु न प्रमाद्यन्ति । (N. Para.) तृषार्ताः वनस्य शोभाम् च पश्यन्ति । रुषाम शान्तः काकः तृष्यति । वयम् न कदापि लुभ्यामः । हे पुत्र! त्वम् न कदापि लुभ्य, लोभः दुःखस्य कारणम् अस्ति । किम् एतत् पाषाणम् क्षाम्यति ? हे राम! प्रजाभ्यः दुःखानि नश्यन्तु, प्रजाः च नन्दन्तु । किम् पुत्राम् सीतायाः ते भ्रातरः ?

१. धातवः :- दिव् (दीव्) - चमकना, खेलना
कृश् - कमजोर होना
शम् (शाम्) शान्त होना
रुष् रुसना
त्रस् डरना
सिव् (सीव्) - सीना
क्षम् (क्षाम्) - क्षमा करना
तृष् - प्यासा होना
लुभ् - लालच करना

२. लकारं कृत्वा :-

| | | |
|---|---|---|
| दीव्यति | दीव्यतः | दीव्यन्ति |
| दीव्यसि | दीव्यथः | दीव्यथ |
| दीव्यामि | दीव्यावः | दीव्यामः |

३. पदं कोशं कृत्वा :-

(क) रिक्तस्थानानां पूर्तिं कुरु :-

१. शिशूनाम् तारकाणां ..... २. सज्जनाः दुर्जनेभ्यः ..... पिता ..... नृत्यति । ४. मेघः ..... शुष्यति । ५. नृपाः ..... न क्षाम्यन्ति ।

(ख) अनुवादं कुरुत :-

१. तव सदा कीदृशं मूल्यं भवति ? २. ग्रीष्मे उद्याने कः शोभां कृत्वा सरः जलेन पूर्णं भवति । ३. तृषार्तः जनः कदापि न क्रुध्यति । ४. हे छात्राः यूयं कदापि पाठेषु न प्रमादं कुरुत । ५. तव गृहं कः लुभ्यति ? तस्मात् कारणात् तत् नष्टं भवति ।

पाठ 2 पाठ:

## लङ् लकार

राम: वनम् अगच्छत्

राम: लक्ष्मण: च वनम् अगच्छताम् ।

सीता राम: लक्ष्मण: च वनम् अगच्छन् ।

रावण: लङ्कायाम् अवसत् मारीच: अपि तत्र अवसत् ।

तौ वनम् अपच्यावताम् । सीता कुटीरं अमार्जीत् ।

राम: लक्ष्मण: च कुटीरे न अरक्षताम् । रावण:

सीताम् अहरत् । राम: अपि अनुसृयत् लक्ष्मण:

अपि अनुसृयत् । वनस्य जीवा: रक्षा: च व्याकुला:

अभवन् । सुग्रीवस्य अमात्य: सीतायाः अन्वेषणाय

तं दूतम् अप्रेषत् । स: अशोकवाटिकायां सीताम्

अपश्यत् । सीता तम् यदा अपश्यत् तदा सा

अरक्षत् । स: सीतायै रामस्य अङ्गुलीयकम्

अयच्छत् । सीताया: मनः अप्रसीदत् ।

पवनसुत: लङ्कां अप्रसादत् । उद्यानम् च अनाशयत् ।

रावण: धनुषे अयुञ्जत् ।

त्वम् किम् रामस्य कथाम् अशृणो: ? अहम्

तु रामस्य कथाम् अशृणवम् । वयम् तु रामलीलाम्

अपि अपश्याम । युवाम् रामस्य चित्रम् अपातरतम्

अपि च अपाठिषम् अपठिष्व ।

अभ्यास

१. नीचे शब्द :- कुटीर - कुटिया (दा) दत्त - दिया

अङ्गुलीयक - अंगूठी (तृ) तर - तरना

पवनसुत: - हनुमान्

२. समझकर के लिखें :- अगच्छत् अगच्छताम् अगच्छन्

अगच्छ: अगच्छतम् अगच्छत

अगच्छम् अगच्छाव अगच्छाम

३. घर का काम :- (क) रिक्त स्थान की पूर्ति करो :-

१. सीता लक्ष्मण: च रामेण --- वनम् ---- । २. लङ्कायाम्

रावण: ---- । ३. रावण: सीताम् ---- । किम् --- पाठम्

अपठ: । वृद्धात् --- अपतत् ।

(ख) हम दोनों ने पाठ पढ़ा । गोपाल ने रक्षा रखा अपने पैर पानी

में । कन्याएं वन के भवन में रहती । हम ने रात्रि को

आकाश में तारों को देखा । क्या तुम ने रामायण को पढ़ा

है । राम एक धर्मशील राजा था ।

## द्वादशः पाठः — आश्रमः

(इकारान्त पुल्लिङ्ग, तुदादिगण)

हरिः अहम् आश्रमम् अगच्छम् । आश्रमे

ऋषयः मुनयः यतयः च वसन्ति । तत्र द्वौ ऋषी

अपि स्तः । तत्र एकः ऋषिः अस्ति । ऋषेः

द्वौ कपी वसतः । तौ मुनीन् न तुदतः । वृक्षेषु

पुष्पाणि सन्ति । पुष्पेषु अलयः गुञ्जन्ति । यदा ऋषयः

इच्छन्ति तदा कविः व्याख्यानं ददाति । मुनयः

प्राणायामं, ध्यानं जलम् अपिबन्ति । शिष्याः जलं

पादयोः सिञ्चन्ति आश्रमम् च गोमयेन लिम्पन्ति ।

अत्र नृपतयः धातवः अकुर्वन्ति । ऋषीणां

चित्तम् शान्तम् भवति । ते शिष्यान् उपाध्यायाः

गौः शिष्याः । हरिः संसारम् सृजति । सूर्यम् हरिम्

भजत । अहं गार्हपत्यम् क्षिपामि । तत्र मनसाम् व्यापारः

नश्यति । जीवान् न तुदत । अरीन् क्षमध्वम् । हरेः

भक्तानाम् व्यापारः नश्यति ।

अत्र आश्रमे कदापि कोलाहलः न भवति ।

ऋषयः शान्तिं निश्चयं यान्ति । मुनीनाम् आचारः

शुचिः अस्ति । नृपतीनाम् आर्यः तथा आदरः न

भवति यथा मुनीनाम्, ऋषीणां च । ते

देवं शान्तिं इव दीव्यन्ति । संसारं त्यक्त्वा

आत्मानं च हरन्ति । ते मोक्षम् अवन्दन्ति ।

### अभ्यासः

१. शब्दार्थः — लवः — कण (पुंजारी हुई) तुद् — तंग करना
गतिः — संन्यासी (इष्) इच्छ — चाहना
गिरिः — पर्वत (लिप्) लिम्प — लीपना
कपिः — बन्दर (सिच्) सिञ्च — सींचना
वनम् — वन (दृश्) दृश — देखना
अरिः — शत्रु (क्षम्) क्षम — क्षमा करना
कविः — कवि (क्षिप्) क्षिप — फेंकना
मालिनी — मालिन (मिद्) मिद — घृणा
अग्निः — आग

तुदति तुदतः तुदन्ति
तुदसि तुदथः तुदथ
तुदामि तुदावः तुदामः

२. (अभ्यास के लिये : — (क) हरि शब्द के रूप व्याकरण की पुस्तक से देखिये)

३. वार का काम :—

(क) शब्दों का प्रयोग वाक्य में कीजिये —

आश्रमे, अलयः, गिरयः, मुनीनाम्, हरेः ।

(ख) मुनयः कीदृशाः :—

१. आश्रमे पुष्पों पर गुंजार्ते हैं आश्रम का पाते हैं । २. बन्दर
वनों में पेड़ों को खाते हैं और फेंकते हैं । ३. क्या तुम (उदात्त) में
आश्रम में हो ? ४. गुरु का मोक्ष तत्त्वम् (अप्रधान) है शत्रुओं का आदर
५. क्या हम आश्रम में वृक्षों को जल दें ?

## अष्टादशः पाठः

(चुरादि गण, त्वा - क्त)

चोराः चौरयन्ति। नृपतयः चौरान् ताडयन्ति दण्डयन्ति च। अतः अहम् कथयामि यत् चौराणाम् राजपुरुषेभ्यः भयम् भवति। हे बालकाः! यूयम् किम् जानाथ? हे अतिथयः यूयम् भोजनम् गृह्णीत। हे मृगः यूयम् वनम् गच्छत। हे हरे! त्वम् हरेः कृपां अवाप्नुहि। हे देव! त्वाम् त्वम् कारणम् वदन्तः कविः कालिदासः शाकुन्तलम् अरचयत् जगति च उत्तमम् ... । अहम् वृद्धान् अपूजयम्। युवाम् चर्मम् अपातयतम्। नरपतयः प्रजाः पालयन्ति। त्वम् किम् लिखसि?

सीता पाठम् पठित्वा पत्रम् अलिखत्। जानकिः भोजनम् दत्त्वा जलम् अपायत्। अहम् जित्वा कार्यम् अकारयम्। देवदत्तः गुरुम् नत्वा पाठम् अस्मारयत्। कथाम् कथयित्वा तण्डुलान् पचति। मधूनि नीत्वा केकारवान् कुर्वन्ति। युवाम् स्नात्वा हरिम् अपूजयतम्। रामः रावणम् जित्वा हत्वा च अयोध्याम् सीतया सह अगच्छत्।

शिक्षणीयः ग्रन्थः पठितः। बालकः भोजनम् खादितम्। शकुन्तलया पाठः पठितः। सीतया पुस्तकम् पठितम्। मया ग्रन्थः अधीतः। ... । जानकिना किम् श्रुतम्। मया सीता दृष्टा। रावणः रामेण हतः। सीतया गीतम् श्रुतम्। रामेण सीता दृष्टा। बालकैः भोजनम् खादितम् जलम् च पीतम्। ... । हरेः कृपया राजानः तुष्टाः प्रजाः च नष्टाः। ... । शकुन्तलया गुरवः स्नात्वा जलानि अपायन्त।

### अभ्यासः

पूज् - पूजा करना
श्रु, शृ - सुनना

2. शब्दार्थ लिखिए:— राजपुरुष - सिपाही
केकारव - मोर की ध्वनि
(चोर) चौर - चुराना
कथ् - कहना
गद् - बोलना
चिन्त् - विचार करना

3. समझकर लिखिए: चारयति, चारयतः, चारयन्ति
चारयसि चारयथः चारयथ
चारयामि चारयावः चारयामः

## संख्या

2 – एकः देवः सर्वभूतेषु गूढः।

2 – द्वौ पक्षौ मासस्य भवतः। कृष्णः पक्षः च शुक्लपक्षः च।

3 – त्रयः लोकाः भवन्ति। पृथिवी लोकः पातालः लोकः स्वर्गलोकः च।

4 – चत्वारः वेदाः सन्ति। ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः अथर्ववेदः च।

5 – पञ्च यज्ञाः गृहस्थस्य भवन्ति। ब्रह्मयज्ञः, देवयज्ञः, पितृयज्ञः, भूतयज्ञः, आतिथ्ययज्ञः च।

6 – षड् ऋतवः भारते वर्षे भवन्ति। ग्रीष्मः, वर्षाः, शरत्, हेमन्तः, शिशिरः, वसन्तः च।

7 – सप्त काण्डानि रामायणस्य सन्ति, बालकाण्डम् अयोध्याकाण्डम् अरण्यकाण्डम् किष्किन्धाकाण्डम् सुन्दरकाण्डम् युद्धकाण्डम् उत्तरकाण्डं च।

8 – अष्टौ अष्टाध्यायीनामध्यायाः सन्ति

9 – नव रत्नानि सन्ति।

10 – ~~कः~~ नवतारा: विष्णोः भवन्ति –

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामनः।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की च ते दश॥

11 – एकादश प्रसिद्धाः उपनिषदः सन्ति। ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्डक-माण्डूक्य-तैत्तिरीय-ऐतरेय-छान्दोग्य-बृहदारण्यक-श्वेताश्वतराः इति।

12 – द्वादश मासानां नामानि भवन्ति – चैत्रः, वैशाखः, ज्यैष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुनः च।

13 त्रयोदश – ~~त्रि~~ दश च त्रयोदश भवन्ति।

14 चतुर्दश विद्याः भवन्ति। षट् वेदाङ्गानि, चत्वारः वेदाः, मीमांसा-न्यायशास्त्रम्, धर्मशास्त्रम्, पुराणम्, अर्थशास्त्रम् च।

15 पञ्चदश

16 षोडश

17 सप्तदश

18 अष्टादश

19 नवदश, ~~अ~~एकोनविंशतिः, एकोनविंशति

20 विंशतिः

प्रकाशविराम: ~~प्रकाशविराम~~ पाठ:

## संख्या

2 - एक: देव: सर्वभूतेषु गूढ:।

2 - द्वौ पक्षौ मासस्य भवत:। कृष्ण पक्ष: च शुक्ल पक्ष: च।

3 - त्रय: लोका: भवन्ति। पृथिवी लोक: पाताललोक: स्वर्गलोक:

4 - चत्वार: वेदा: सन्ति। ऋग्वेद:, यजुर्वेद:, सामवेद: अथर्ववेद: च।

5 - पञ्च यज्ञा: गृहस्थस्य भवन्ति। ब्रह्मयज्ञ:, देवयज्ञ:, पितृयज्ञ:, भूतयज्ञ:, अतिथियज्ञ: च।

6 - षड् ऋतव: भारते वर्षे भवन्ति। ग्रीष्म:, वर्षा:, शरत्, हेमन्त:, शिशिर:, वसन्त: च।

7 - सप्त काण्डानि रामायणस्य सन्ति, बालकाण्ड: अयोध्याकाण्ड: अरण्यकाण्ड: किष्किन्धाकाण्ड: सुन्दरकाण्ड: युद्धकाण्ड: उत्तरकाण्ड: च।

8 - अष्ट अष्टाध्यायीनामव्याकरणग्रन्थस्य अध्याया: सन्ति

9 - नव रत्नानि सन्ति।

10 - दश अवतारा: विष्णो: भवन्ति :—

मत्स्य: कूर्म: वराहश्च नरसिंहोऽथ वामन:।
राम: रामश्च कृष्णश्च बुद्ध: कल्की च ते दश॥

11 - एकादश प्रतिष्ठा: उपनिषद: सन्ति। ईश - केन - कठ - प्रश्न - मुण्डक - माण्डूक्य - तैत्तिरीय - ऐतरेय - छान्दोग्य - बृहदारण्यक - श्वेताश्वतरा: इति।

12 - द्वादश संवत्सरस्य मासा: भवन्ति — चैत्र:, वैशाख:, ज्यैष्ठ:, आषाढ:, श्रावण:, भाद्रपद:, आश्विन:, कार्तिक:, मार्गशीर्ष:, पौष:, माघ:, फाल्गुन: च।

13 त्रयोदश - त्रयश्च दश च त्रयोदश भवन्ति।

14 चतुर्दश विद्या: भवन्ति। षट् वेदाङ्गानि, चत्वार: वेदा:, मीमांसा - न्यायशास्त्रम्, धर्मशास्त्रम् च।

15 पञ्चदश

16 षोडश

17 सप्तदश

18 अष्टादश

19 नवदश, अतिविंशति:, एकोनविंशति

20 विंशति:

## अभ्यास

प्रश्न का काम :— (क) [illegible] (ख) [illegible] :—

1. [illegible] ?
2. [illegible] ?
3. [illegible] ?
4. [illegible] ?

## (लृट् लकार, उकारान्त पुंल्लिङ्ग)

साधवः परोपकाराय सदा श्रमम् कारयन्ति। गुरवः धर्मम् वादयन्ति। शिष्याः तरूणाम् छायाम् पाठम् पाठयन्ति। शिशुः क्रीडादात्र, ~~क्रीडनम्~~ क्रीडयति। शर्मणा कृपया पूजाः सुरक्षण वर्तयन्ति। ग्रहम् पलाण्डुम् न खादयामि। ग्रामायणः उर्वारुम् रोपयन्ति। वायुः वेगेन वृक्षाणाम् पत्राणि फलानि च पातयन्ति। पुत्रा! वयम् शत्रून् कदा जयामः? साधूनाम् रक्षाय पापानाम् च विनाशाय कृष्णः ~~सम्~~ रमते।

ग्रीष्म ग्रीष्मकाले सस्याः म्लायन्ति। मन्दम् वाति वायुः। तप्तमरुतः जलम् शुष्कम् पातयन्ति। भारत वर्षे ऋतवः भवन्ति। ग्रीष्मम् ~~गत्वा~~ गच्छन्ति ~~गच्छून~~ तप्तमरुतः। जलम् मानवाः हरिणाः सरोवराणाम् जलम् शोषयन्ति। वर्षासु ग्रीष्मकाले सस्याः ग्लानयन्ति, मयूराः नर्तयन्ति, जलम् शुष्कम् च पातयन्ति। शरत्काले कमलानि सरोजानि विकासयन्ति। हेमन्ते शालयः भावयन्ति। शिशिरे मानवाः ग्रीष्मातपम् शीतकरम् भावयन्ति। वसन्ते द्रुमाः लुठयाः वायुः सुगन्धैः दिवसाः च रम्याः भावयन्ति। गतम् वर्षे पाठशालां गमिष्यामि। वयम् तत्र एव स्थास्यामः। गुरुः उपदेशम् दास्यति। वयम् धर्मम् ज्ञास्यामः। यूयम् ज्ञानम् पास्यथ।

### ग्रीष्मकाले

१- नये शब्द :- तप्त - गर्म वृक्ष
शिशु - बच्चा
पलाण्ड - प्याज
शीतल - ठंडा
मुर्वारु - ककड़ी

वा - चलना (हवा का)
गा - जाना
पा - पीना
स्था - ठहरना

२. समास के नियम :- विशेषण शब्दों से लृट् लकार के रूपों के नियम व्याकरण पाठशाला देखिये।

३. घर का काम :- (मौ. पत्नी के उत्तर दो :-

१. साधवः परोपकाराय किम् कारयन्ति?

2. [illegible]

3. [illegible]

4. [illegible]

5. [illegible]

(ख) [illegible] :-

1. [illegible]

2. [illegible]

3. [illegible]

4. [illegible]

5. [illegible]

6. [illegible]

7. [illegible]

एकविंश पाठः

पद्यानि

वेद रामायणं चैव पुराणं भारतं तथा।
आदौ मध्ये तथा चान्ते हरिः सर्वत्र गीयते ॥ १ ॥

सर्ववेदमयी गीता सर्वधर्ममयो मनुः।
सर्वतीर्थमयी गङ्गा सर्वदेवमयो हरिः ॥ २ ॥

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः ॥ ३ ॥

तारागणं भूषणं चन्द्रो नारीणां भूषणं पतिः।
पृथिव्या भूषणं राजा विद्या सर्वस्य भूषणम् ॥ ४ ॥

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च ॥ ५ ॥

रूपः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः।
मन्त्रौषधिवशः सर्पः खलः केन निवार्यते ॥ ६ ॥

कुलस्यार्थे त्यजेदेकम् ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
जनपदस्यार्थे ग्रामं आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ॥ ७ ॥

~~कुलस्यार्थे त्यजेदेकम् ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।~~
~~जनपदस्यार्थे जीवं आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ॥ ८ ॥~~

सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःखस्यानन्तरं सुखम्।
सुखदुःखम् मनुष्याणां चक्रवत् परिवर्तते ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

१. पर्यायशब्द :- समाप्तिः - अन्तः
प्रवासेषु - विदेशे में
क्रूरः - कठोर
अनन्तरम् - पश्चात्

२. सन्धियाँ :- चान्ते = च + अन्ते
व्याध्यर्थस्यौषधम् = व्याधितस्य + औषधम्
सुखस्यानन्तरं = सुखस्य + अनन्तरम्
दुःखस्यानन्तरं = दुःखस्य + अनन्तरम्

३. पाठ का काम :- (क) — पाँचवें तथा आठवें श्लोक का कण्ठस्थ करो।
(ख) — तीसरे तथा चौथे श्लोक का अर्थ लिखो।

2. कृषक: कस्मिन् समये गच्छति ?
3. गायत्री कस्मै पत्रं लिखति ?
4. मधुरा: कथं गच्छन्ति ?
5. किमर्थं सुधा जलं पास्यति ?

(ख) संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. मैं स्नान करके घर जाकर पुस्तक को पढ़ूंगा।
2. ईश्वर की कृपा से हम प्रसन्न रहेंगे।
3. तुम दोनों घर कब जाओगे ?
4. क्या बालक वृक्षों की छाया में बैठेंगे ?
5. राजा उद्यानों में बालक घूमेंगे।
6. हमें अपने शत्रुओं को जीतना है।
7. मैं वेद को पढ़कर पण्डित बनूंगा।

एकविंश पाठः

पद्यानि

वेद रामायणं चैव पुराणं भारतं तथा।
आदौ मध्ये तथा चान्ते हरिः सर्वत्र गीयते ॥ १ ॥

सर्ववेदमयी गौता सर्वधर्ममयी मनुः।
सर्वतीर्थमयी गङ्गा सर्वदेवमयो हरिः ॥ २ ॥

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः ॥ ३ ॥

तारागणं भूषणं चन्द्रो नारीणां भूषणं पतिः।
वाणिज्यं भूषणं राजा विद्या सर्वस्य भूषणम् ॥ ४ ॥

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च ॥ ५ ॥

दुष्टः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः।
मन्त्रौषधिवशः सर्पः खलः केन निवार्यते ॥ ६ ॥

मलिनानां स्वरो रत्नम् नारीरत्नं पतिव्रतम्।
रूपं कुरूपाणां क्षमा रत्नं तपस्विनाम् ॥ ७ ॥

~~[illegible] धर्मो यस्य च जीवति।~~
~~[illegible] जीवन् स उपभोजनम् ॥ ८ ॥~~

सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःखस्यानन्तरं सुखम्।
सुखदुःखम् मनुष्याणां चक्रवत् परिवर्तते ॥ ९ ॥

पद्यात

2. पर्यायशब्दः — समासेन - संक्षेपतः
प्रवासेषु - विदेशे में
क्रूर - क्रूरतर
अनन्तरम् - पश्चात्

2. सन्धयः — चान्ते = च + अन्ते
व्याध्यितस्यौषधम् = व्याध्यितस्य + औषधम्
सुखस्यानन्तरं = सुखस्य + अनन्तरम्
दुःखस्यानन्तरम् = दुःखस्य + अनन्तरम्

3. प्रश्न के काम :— (क) — पांचवें तथा आठवें श्लोक को कण्ठस्थ करो।
(ख) — दोहरे तथा चौथे श्लोक का अर्थ लिखो।

## द्वादशः पाठः
(विद्या लभते)

### शब्दाचारः

मनुष्यः ईश्वरम् भजेत् । देवान् अर्चयेत् । ब्राह्मणेभ्यः दक्षिणाम् दानम् च यच्छेत् । गुरून् नमेत् । आचार्यान् अर्चयेत् । नित्यम् शुद्धवेषः प्रसन्नचित्तः च स्यात् । सर्वदा निश्चिन्तः, निर्भयः, धार्मिकः, आस्तिकः नम्रः च स्यात् । सत्यम् वदेत् । अनृतम् न वदेत् । परधनम् न अभिलषेत् । अन्यदोषान् न कथयेत् ।

राष्ट्रे ~~सर्वका~~ नागरिकाः धार्मिकाः भवेयुः । राजस्य आज्ञाः पालयेयुः । स्वकर्तव्यानि पालयेयुः । निर्बलानाम् दीनानाम् च त्राणाय न हरेयुः ।। राष्ट्रस्य रक्षाय स्वप्राणान् अपि उत्सर्जयेयुः । राज्यास्य कारणात् नागरिकाणाम् हितम् रक्षेयुः । लोकानाम् ~~सेवाकार्यम्~~ अधिकारान् रक्षेयुः । तौ राजपुरुषौ चौरेभ्यः नगरम् रक्षेताम् । स्त्रीपुरुषौ सुखेन वसेताम् । ~~सर्वत्रेताम्~~

त्वम् देवताभ्यः अधिकम् गुरुभ्यः अपि आचार्येभ्यः च अधिकम् न श्रद्धेयाः । वस्त्रपूतम् जलम् पिबेः । गुरुम् अनत्वा पाठम् न पठेः । हे नागरिकाः ! यूयम् ब्राह्मणान् न निन्देत । दुर्दान् गुरून् नृपान् च न अभिक्षिपेत । हे छात्राः ! यूयम् अलसाः न स्यात । हे रामश्यामौ ! युवाम् गुरुम् नत्वा गृहम् गच्छतम् । हे निर्मलाकमले ! युवाभ्याम् संघम् कृत्वा भजनम् गायेतम् ।

गुरो ! किम् अधीहि पाठम् पठेयम् ? किम् अहम् याचकेभ्यः धनम् यच्छेयम् ? किम् वयम् देशस्य रक्षाय ~~युद्धं युध्यामः~~ शत्रून् च जयेम ?

### अभ्यासः

१. पर्यायशब्दः :- अर्च् - पूजा करना
अभिलष् - इच्छा करना
अभिक्षिप् - तिरस्कार करना
दुर्दान् - कंजूस
उत्कोच - रिश्वत
अधीहि - ध्यान देकर पढ़ो
वस्त्रपूतम् - कपड़े से छाना हुआ
याचक - भिखारी

2. [illegible]

[illegible]

1. [illegible]

(क). [illegible] [illegible]

(ख). [illegible]

2. [illegible]

2. [illegible]

3. [illegible]

4. [illegible]

5. [illegible]

6. [illegible]

त्रयोविंशः पाठः

~~फलमाला पंचतंत्र~~

सूक्तयः

१ – दुर्लभः प्राकृतं मित्रं दुर्लभः क्षेमकृत् सुतः ।
दुर्लभा सदृशी भार्या दुर्लभः त्वज्जनः प्रियः ॥

२ – साध्वनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साध्वः ।
तीर्थं फलति कालेन सद्यः साध्वसमागमः ॥

३ – शान्तितुल्यं तपो नास्ति न संतोषात् परं सुखम् ।
न तृष्णायाः परो व्याधिः न च धर्मो दयासमः ॥

४ – नादेयानां भयं वातात् पद्मानां हिमशीतात् भयम् ।
पर्वतानाम् भयं वज्रात् साध्वनाम् दुर्जनाद् भयम् ॥

५ – प्रथमं नार्जिता विद्या द्वितीयं नार्जितं धनम् ।
तृतीयं नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति ॥

६ – हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
कर्णस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥

७ – पयः पानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम् ।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ॥

८ – सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।
सत्येन वायवो वान्ति सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥

९ – पुरस्तेषु या विद्या परहस्तेषु यद्धनम् ।
उत्पन्नेषु न कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम् ॥

१० – सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा ।
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः ॥

१,५ अभ्यास

१ – शब्दार्थः – प्राकृतम् = सच्चा
क्षेमकृत् – प्रभु की सेवा करने वाला
सद्यः – शीघ्र
[illegible] – बांधव

त्रयोविंशः पाठः

~~पञ्चतन्त्रात्~~ पञ्चतन्त्रात्

सूक्तयः

१ – दुर्लभः प्राकृतं मित्रं दुर्लभः क्षेमकृत् सुतः ।
दुर्लभा सदृशी भार्या दुर्लभः स्वजनः प्रियः ॥

२. – साध्वनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः ।
तीर्थं फलति कालेन सद्यः साधुसमागमः ॥

३. – शान्ततुल्यं तपो नास्ति न संतोषात् परं सुखम् ।
न तृष्णायाः परो व्याधिः न च धर्मो दयासमः ॥

४. यादसानां भयं वातात् पद्मानां हिमशीतात् भयम् ।
पर्वतानाम् भयं वज्रात् साधूनाम् दुर्जनात् भयम् ॥

५. प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति ॥

६. हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥

७. पयः पानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम् ।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ॥

८ – सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।
सत्येन वायवो वान्ति सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥

९ – पुस्तकस्था या विद्या परहस्तेषु यद्धनम् ।
उत्पन्नेषु न कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम् ॥

१०. सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा ।
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः ॥

१,५ अभ्यास

१. शब्दार्थः – प्राकृतम् = सच्चा
क्षेमकृत् – प्रसन्नता करने वाला
सद्यः – शीघ्र
व्याधिः – बीमारी

पृथ्वी : - ईश्वर

[illegible] - [illegible]

[illegible] - [illegible]

2. तात्पर्य :- [illegible] = [illegible]

[illegible] = [illegible]

[illegible] = [illegible]

3. [illegible]

[illegible]

[illegible]

## पुनरावृत्ति

(इकारान्त उकारान्त नपुं०)

गङ्गायाः वारि पवित्रम् भवति। गौतमः नक्तम् दधि न भक्षयति। लोकाः मधूनि वनम् अगच्छन्। मधुना शरीरस्य रोगाः नश्यन्ति। महाराजः रणजित्सिंहः अक्षिणी काणः अभवत्, परन्तु स्वबलेन सः शत्रून् जित्वा अपरिमितं पञ्जाम्बुप्रदेशं राज्यम् अकरोत्। समुद्रस्य वारीणि मधुराणि न भवन्ति। वैद्यः अक्षीणि औषधानि ददाति। भोजनम् भक्षयित्वा वारि न पिबत। नक्तम् दधि न खादत।

खादन्तः दधानि शर्कराम् मिश्रयति। बालस्य शरीरम् मृदु भवति। अहम् प्रातराशनम् बदाम फलानि भक्षयामि। सुरेन्द्रस्य जानुनि क्षतानि आसन्। रामस्य [illegible] अस्ति। ललनाः वारीणि कूपम् अगच्छन्। नराः अक्षिभ्याम् पश्यन्ति। पशवः च खगाः च [illegible] चक्षुर्भ्याम् पश्यन्ति। लोकस्य इदम् प्रसिद्धम् यत् [illegible] पश्यति। शिवस्य त्रीणि अक्षीणि सन्ति। हरः तृतीयेन अक्षिणा कामदेवम् अदहत्। पर्वतस्य शानुषु वृक्षाः सन्ति। वृक्षेषु मधुमक्षिकाः वसन्ति। मधुमक्षिकाः वनानि पुष्पाणाम् रसम् च पिबन्ति, [illegible] च मधूनि च वनात् [illegible]। यदा मधुमक्षिकाः दशन्ति तदा बालकानाम् बालिकानाम् अक्षीणि पतन्ति।

### अभ्यासः

2. नर्थशब्दः —

| | | | |
|---|---|---|---|
| वारि | - पानी | नक्तम् | - रात को |
| दधि | - दही | मृदु | - कोमल |
| मधु | - शहद | लघु | - छोटा |
| अक्षि | - आँख | ललना | - स्त्री |
| अक्षीय | - दूसरी | कूप | - कुआँ |
| जानु | - घुटना | हर | - शिव |
| अक्षु | - आँसू | नम् | - बचाना |
| | | दह् | - जलाना |

1. तालिकां पूरयत:— वारि, दधि तथा मधु के रूप व प्रयोग

पाठशाला में दीजिये।

## पञ्चमः पाठः

(इकारान्त उकारान्त नपुं०)

गङ्गायाः वारि पवित्रम् भवति। गौतमः नक्तम् दधि न भक्षयति। लोकाः मधुने वनम् अगच्छन्। मधुना शरीरस्य रोगाः नश्यन्ति। महाराजः रणजित्तसिंहः अक्षणा काणः आसीत्, परन्तु स्वबलेन तेन शत्रून् जित्वा अपरिमितं राज्यम् अर्जितवान्। समुद्रस्य वारीणि मधुराणि न भवन्ति। वैद्यस्य औषधानि गृह्णन्ति। भोजनम् भक्षयित्वा वारि न पिबत। नक्तम् दधि न खादत।

रवीन्द्रः दध्नि शर्कराम् मिश्रयति। बालस्य शरीरम् मृदु भवति। अहम् प्रतिदिनम् बहूनि फलानि भक्षयामि। सुरेन्द्रस्य जानुनि क्षतम् आसीत्। रामस्य नेत्रम् तत्र गच्छति। ललनाः वारि पीत्वा नूपुरम् अधारयन्। नराः अक्षिभ्याम् पश्यन्ति। पशवः च खगाः च अपि अक्षिभ्याम् पश्यन्ति। लाक्ष इदम् प्रासादम् अतः लोकः अक्षणा पश्यति। शिवस्य त्रीणि अक्षीणि सन्ति। हरः तृतीयेन नेत्रेण कामदेवम् अदहत्।

पर्वतस्य सानुषु वृक्षाः सन्ति। वृक्षेषु मधुमक्षिकाः वसन्ति। मधुमक्षिकाः अक्षीणि पुष्पाणाम् रसम् च पिबन्ति, तेन च मधूनि च जनयन्ति। यदा मधुमक्षिकाः दशन्ति तदा बालकानाम् अक्षिभ्याम् अश्रूणि पतन्ति।

### अभ्यासः

१. नपुंसकलिङ्गशब्दाः —

| | | | |
|---|---|---|---|
| वारि | - पानी | नक्तम् | - रात को |
| दधि | - दही | मृदु | - कोमल |
| मधु | - शहद | लघु | - छोटा |
| अक्षि | - आँख | ललना | - स्त्री |
| अक्षीय | - हड्डी | क्षीर | - दूध |
| जानु | - घुटना | हर | - शिव |
| अश्रु | - आँसू | नमः | - नमस्कार |
| | | दृश् | - देखना |

२. तृतीयान्तं कृत्वा लिखत — वारि, दधि नक्तम् मधु च सप्त वाक्यानि पाठानुसारं दीयन्ताम्।

3. पत्र के भाग :—

(क) निम्न शब्दों के लिंग बताइए :—

1. ——— स्त्रीलिंग है।
2. दयानन्द ——— नाम पुल्लिंग।
3. लाभ ——— अप्राणिवाचक।
4. ——— मनुष्यजातिवाचक संज्ञा।
5. सुरेन्द्र ——— स्त्रीलिंग।

(ख) खाली में उचित शब्द भरिए :—

1. शब्द ही शरीर के रोग नष्ट होते हैं।
2. तुम हरदोई कहाँ रहते हो।
3. पशु और पक्षी को पालना से हटाते हैं।
4. ने कानपुर ! मोजा, तथा कर पाना के पढ़ा।
5. हिन्दू जी ने मालवा प्रान्त से कानपुर को जाना पड़ा।

## परीक्षोपयोगी पाठ:

(किम् शब्द)

कः रामायणम् पठति ?

बालकः रामायणम् पठति ।

किं रामायणम् पठामि ?

कथा: सर्वः च रामायणम् पठामि ।

किं वयम् पठामः ?

सीता, रामः लक्ष्मणः च वनम् गच्छन्ति ?

रामः कम् प्रणमति ?

रामः रावणम् प्रणमति ।

बालकाः कान् प्रणमन्ति ?

बालकाः गुरुजनान् प्रणमन्ति ।

* कुत्र कानि पुस्तकानि सन्ति

कुत्र वयम् पुस्तकानि पठन्ति ? कुटीरे मम पुस्तकं अस्ति, कुटीरे च रामस्य पुस्तकं अस्ति ।

त्वम् कानि पुस्तकानि पठसि ?

अहम् रामायणम्, महाभारतम्, शाकुन्तलम् च पठामि ।

बालकाः कस्य: मार्गात् गच्छन्ति ?

बालकाः मार्गेण मार्गात् गच्छन्ति ।

अयम् छात्रः कस्मात् ग्रामात् वदति ?

अयम् छात्रः शान्तिपुरग्रामात् वदति ।

चोराः कस्मात् मार्गात् धावन्ति ?

चोराः वनात् मार्गात् धावन्ति ।

कति कति समुद्राः सन्ति ?

सप्त सप्त समुद्राः च सन्ति ।

### पाठमाला

१. नवशब्दाः — ~~रामायणस्य कथानायिका~~ एक स्त्री का नाम
शाकुन्तलम् - एक काव्य का नाम

२. रामस्य कथायाः — किसी देश की राजधानी का नाम
नगरात् ग्रामात् में प्रयोग पाठ में देखिये।

३. पाठ का भाव:
क. - किसी लिखित शब्दों का भाषा में प्रयोग को लिये:—

## षड्विंशः पाठः

(यत्, तत्, सर्व)

सर्वम् पुराणम् साधु न भवति। अपि तु तत् तत् सर्वं तत्तत्कालस्य जनानाम् रुचिम् अनुसरति। ये जनाः सर्वाणि कृत्यानि विश्वासम् भजन्ति तेषाम् जीवनम् भयम् न प्राप्नोति। यानि यानि पुस्तकानि यूयम् इच्छथ तानि तानि पठत। विश्वस्य कृते सर्वे जनाः सदृशाः वस्तूनि। सामान्यः मानवः यत्नेन कुर्वन्ति। ये जनाः न विद्याम् न तपः न च दानम् तेषाम् जीवनम् किम् अपि फलम् न प्राप्नोति। तेषाम् धनम्, धनम् च यूयम् तेभ्यः धनम् धनम् च मन्यत। ये ये जनाः उपकारान् सदृशम् कुर्वन्ति तेषाम् जीवनम् सफलम् भवति। यानि गृहे पालितानाम् कुक्कुराणाम्, शुकानाम् च यूयम् न भवेत् तत् गृहम् श्मशानसदृशम् प्रतीते।

यस्मात् कारणात् त्वम् एव पाठशालायाः गच्छसि तस्मात् एव कारणात् अहम् पाठशालायाः गच्छामि। यत् यत् कार्यम् सुशीलाः करोति तत् तत् एव कार्यम् लीला अपि करोति। एव मार्गेण रामः वनम् अगच्छत् तेन एव मार्गेण लक्ष्मणः सीता च वनम् अगच्छताम्। हे शिष्याः! यत् यत् गुरुः आदिशति तत् तत् पालयत। विद्यालयम् सर्वेषाम् जनानाम् उत्तमम् प्रतीते। सोमदत्तः सर्वेषु बालेषु चतुरतमः प्रतीते।

### अभ्यासः

१. अधोलिखितानां पदानां —

सर्वम् — पृथक्
पुराणम् — पुराणी
परे — दूरतरे
श्मशानसदृशम् — श्मशानस्य इव
चतुरतमः — सर्वेषु अतिशयेन चतुरः

2. निम्नलिखित के उत्तर दीजिए :—

गिनी, तत, पत शब्दों के अन्त में पूर्णविराम का चिह्न क्यों लगाया जाता है?

3. ~~निम्नलिखित~~ पत्र का काम :—

(क) पत्र के उत्तर दीजिए :—

1. क्या सब बालक पाठशाला जाते हैं?
2. हर एक पुरानी बात अच्छी नहीं हो सकती।
3. जिस के पास न विद्या है और न ~~धन~~ तप, और न धर्म वह तो मनुष्य है ही नहीं।
4. जो जो पाप तुझे चाहते हो उन को त्याग दे।
5. इस देश का राजा कौन है, और उस का नाम क्या है?
6. जिस गाड़ी से तू गाम को जाएगा उसी गाड़ी से गाम को आएगा।

सप्ताहविशेषः ~~[illegible]~~ पाठः

काल: (लकार:)

सरला — सारिकपुरीले । अहोरात्रे कति होरा: भवन्ति ?

सुशीला - चतुर्विंशतिः होराः ।

सरला - कथम, सप्ताहे कति दिनानि भवन्ति ?

सुशीला - सप्त । इदम् सप्ताहे: इति नामतः एव स्पष्टम् ।

~~[illegible]~~ सरला - सुशीले ! जानासि सप्ताहे कानि कानि दिनानि भवन्ति ? तेषाम् नामानि च ~~[illegible]~~ कथय ।

सुशीला - एषा सोमवारः, ततः मङ्गलवारः, बुधवारः, बृहस्पतिवारः, शुक्रवारः, शनिवारः च । मङ्गलवारम् सोमवारम् एषि वदन्ति, बृहस्पतिम् च शुक्रवारम्, शनिवारम् ~~[illegible]~~ शनैश्चरवारम् एषि च कथयन्ति । रविवासरे विद्यालयेषु, कार्यालयेषु तथा न्यायालयेषु अवकाशः अवकाशः च भवति । विद्यार्थिषु एषः कश्चित् विकल्पः न भवति ।

सरला - माले कति सप्ताहाः पक्षाः च भवन्ति ?

सुशीला - सरले ! सत्यम् एव त्वम् सरला असि । इदम् एषि न जानासि यत् माले चत्वारः सप्ताहाः भवन्ति । द्वौ च पक्षौ भवतः शुक्लपक्षः, कृष्णपक्षः च । शुक्लपक्षे चन्द्रः वृद्धिं याति, कृष्णपक्षे च क्षीणः भवति ।

सरला - ~~[illegible]~~ एकस्मिन् वर्षे कति मासाः भवन्ति ? कः ऋतवः इति नामतः कथय ।

सुशीला - द्वादश मासाः । यथा चैत्रः, वैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुनः च । एतेषु पञ्चमासेषु एकैकः ऋतुः भवति । यथा ग्रीष्मः, वर्षा, शरत्, हेमन्तः, शिशिरः, वसन्तः च ।

द्वौ द्वौ मासौ ऋतुः भवति । यथा वैशाखज्येष्ठौ ग्रीष्मः, आषाढश्रावणौ वर्षाः, भाद्रपदाश्विनौ शरत्, कार्तिक-मार्गशीर्षौ हेमन्तः, पौषमाघौ शिशिरः, फाल्गुनचैत्रौ वसन्तः च इति ।

प्रश्नावली

१. रिक्त स्थान :- पक्षी का ... - ... पंख
... - ...
... - ...
... - ...
... - ...

२. सही क्रम :- ..., पत्ता, ... तथा तना को ... के साथ मिलाएं।

३. एक या दो में :-

(क). शब्दों के अर्थ लिखकर संक्षेप में वाक्य बनाइये :- पक्षी, ..., सप्ताहांत, प्रवजन, पंख।

(ख) ... कीजिए :-

१. दो दो ... का एक गुच्छा होता है।
२. ... में पत्ते होते हैं, ... पत्ता और कुछ पत्ते।
३. दिन भर में ... घोंसले छोड़ते हैं।
४. ... से ... प्रवजन में ... हैं और ... को खाते हैं।
५. ... के विभाग, ... तथा ... में प्रवजन होता है।

# अष्टावक्र: पाठ:

## प्रथमोऽध्याय:

१ - माता शत्रु: पिता वैरी येन बालो न पाठित: ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥

२ - उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै: ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा: ।

३ - उद्योगं पुरुषसिंह उपैति लक्ष्मीं दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति ।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोष: ॥

४ - यदा सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तमनसाम् ।
[illegible] ॥

५ - को ऽतिभार: समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम् ।
[illegible] ॥

६ - अन्धस्य दर्पणं नाम बधिरस्य च किं गीतम् ।
[illegible] ॥

७ - क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनां भूषणं सदा ।
निर्धनत्वं सदैवार्यभूषणं भूषणं विना ॥

८ - अर्थो हि परमं नार्या भूषणं भूषणं विना ।
एषा विरहिता तेन शोभनाऽपि न शोभना ॥

### शब्दार्थाः

१ - वर्धशब्दः — वक्र - बगला
उद्यम - परिश्रम
मनोरथ - मन की इच्छा
व्यवसाय - निपुणता
शोभते - सजता
समर्थ - सामर्थ्यवान
व्यवसायिनाम् - परिश्रमी व्यक्तियों के लिये
दृष्टान्त - उदाहरण है
वदन्ति - कहते हैं

# पञ्चविंशः पाठः

## प्रकीर्णक श्लोक

१ - माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥

२ - उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।

३ - उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे ।
राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स बान्धवः ॥

४ - यदा सत्सङ्गरोहितो मोक्षयति मोक्षयति ।
तदा सज्जनगोष्ठीषु पातयति पातयति ॥

५ - को ऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम् ।
को विदेशः विद्वत्तानां कः परः प्रियवादिनाम् ॥

६ - बन्धुः को नाम दुष्टानां कुप्यते को न याच्यते ।
को न हृष्यति वित्तेन कृच्छ्रे को न पण्डितः ॥

७ - छाया शत्रौ च मित्रे च यतीनामेव भूषणम् ।
अपराधिषु सत्त्वेषु नृपाणामेव दूषणम् ॥

८ - गतिः हि परमं नार्याः भूषणं सुजनो जनः ।
तत् विरहितां तेन शोभनो ऽपि न शोभते ॥

## शब्दार्थ

१ - वर्ण शब्दः — बक - बगला
उद्यम - परिश्रम
मनोरथ - मन की इच्छा
व्यसन - विपत्ति
सीदति - थकता
समर्थ - सामर्थ्यवान
व्यवसायिनाम् - परिश्रम करने वालों के लिये
हृष्यति - प्रसन्न होता है
याति - जाता है
दिवसादिनाम् - प्यारा कहने वालों के लिये

## एकोनत्रिंशः पाठः

(उत्तमः, एतत्, युष्मत्)

अहं अहम् चलच्चित्रम् गमिष्यामि। किम् त्वम् अपि मया सह आगमिष्यसि? रामः माम् सम्यक् अवजानाति, किम् तु: त्वाम् अपि अवजानाति। अहम् तत्र मनोहराणि पुष्पाणि आनेष्यामि। किम् त्वम् मह्यम् मधुराणि फलानि आनेष्यसि। मम मित्रम् प्रातः उद्यानं विहरति, किम् तव मातुलः अपि प्रातः उद्यानं विहरति। एतत्कालम् विद्यालये राजः पुस्तकालयः अस्ति। किम् युष्माकम् विद्यालये अपि कार्यात् पुस्तकालयः अस्ति।

अहम् एतत् मन्ये यत् अद्य वायुः शीतः अस्ति। छात्राः सदा प्रसन्नं वदन्ति। यदा मम मित्राणि बालाः क्रीडन्ति तदा अहम् गृहम् प्रत्यागच्छामि। ये मनुष्याः क्रुध्यन्ति, ते बालम् अप्यजानन्ति। यदा नद्यः क्षीणाः भवन्ति, तदा विद्युत्: न्यूनं भवति। छात्राः दीपावलीतः पूर्वम् गृहं सम्मार्जयन्ति। ये जनाः परेषाम् कार्यम् अवहरन्ति ते पापाः एव सन्ति। यदा मम अग्रजः बालाः पुस्तकानि आनेष्यन्ति तदा अहम् पठनं करिष्यामि। गङ्गा यमुना च हिमालयात् निस्सरतः।

### अभ्यासः

1. धातवः —

| | | | |
|---|---|---|---|
| गम् = जाना | एधा + आम् | = | एधाना |
| अञ्च् = चलना, जाना | एध + आम् | = | आनना |
| हृ = ले जाना | एधा + आम् | = | लाना |
| हृ (हर्) चुराना | वि + हर् | = | घूमना |
| | वि + हर् | = | टहल करना |
| गम् = गतिसामान्य | प्र + गम् | = | प्रयाण करना |
| इ = जाना | सम् + इ | = | उदय होना |
| | प्र + इ | = | प्रस्थान होना |
| | परा + इ | = | पलायन होना |

2. लकार परिवर्तन :— एतत्, युष्मत् शब्दों के साथ अभ्यास में दिए शब्दों के

2. [illegible] के लिए नाम :—

निर्देश करें :—

१. मैं [illegible] के पुस्तक मांगता तथा दूँ ।

२. [illegible] से गाड़ी नया पुराना [illegible] चलती है ।

३. जब कोई मांग पूरा करते हैं तो [illegible] हो जाते हैं ।

४. हम अपने [illegible] पास समय कैसे बचा सकते हैं ?

५. हम में जो [illegible] से अधिक चतुर है हम में कौन [illegible] से अधिक चतुर है ?

## द्वितीयः पाठः

(~~मैत्री~~ परिचयः)

## द्वौ छात्रौ

यज्ञदत्तः - भोः सोमदत्त, कुशलं त्वम् ?

सोमदत्तः - कुशलः अहम् परमेश्वरस्य कृपया ।

यज्ञदत्तः - कस्यां कक्षायां पठसि ?

सोमदत्तः - अहम् षष्ठी-कक्षायाम् पठामि ।

यज्ञदत्तः - कति छात्राः सन्ति कक्षायाम् ?

सोमदत्तः - मम कक्षायाम् चत्वारिंशत् छात्राः सन्ति ।

यज्ञदत्तः - किम् किम् पठसि त्वम् ?

सोमदत्तः - अहम् हिन्दी-भाषाम्, गणितम्, सामान्यं विज्ञानम्, सामाजिकम् ज्ञानम्, ~~संस्कृत~~ हिन्दी भाषाम्, परन्तु संस्कृत-भाषाम् न पठामि ।

यज्ञदत्तः - किम् त्वम् संस्कृतम् न पठसि ?

सोमदत्तः अहम्, मित्र ! पठामि संस्कृतम् अपि ।

यज्ञदत्तः यूयम् तत्र किम् संस्कृतपुस्तकम् पठत ?

सोमदत्तः वयम् ..... पठामः ।

यज्ञदत्तः तव विद्यालये कति अध्यापकाः सन्ति ?

सोमदत्तः तत्र अष्टादश अध्यापकाः सन्ति ।

यज्ञदत्तः कः ~~त्वम्~~ भवान् संस्कृतम् पाठयति ?

सोमदत्तः अहं भवान् संस्कृतम् पाठयति ।

यज्ञदत्तः कः भवन्तम् प्रधानाध्यापकः ?

सोमदत्तः श्रीमान् जगदम्बाप्रसादः ~~मम~~ भवन्तम् प्रधानाध्यापकः अस्ति ।

यज्ञदत्तः कति कक्षाः सन्ति तव विद्यालये ?

सोमदत्तः एकादश कक्षाः सन्ति मम विद्यालये ।

यज्ञदत्तः नु संस्कृत भाषणं कर्तुम् अभ्यासं करोषि ?

सोमदत्तः अथ किम्, सरलया भाषया भाषणं कर्तुम् अभ्यासं करोमि ।

यज्ञदत्तः अनुजानीहि आगन्तुम् इदानीम् ।

सोमदत्तः कृपया धन्यवादाः, गच्छ पुनर्दर्शनाय, शुभाः तव पन्थानः सन्तु ।

## एकत्रिंशः पाठः

### स्मरणाधारितः प्रश्नाः

१- त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

२. सा भार्या या गृहे दक्षा
सा भार्या या प्रजावती ।
सा भार्या या पतिप्राणा
सा भार्या या पतिव्रता ॥

३. यो नात्मजे न च गुरौ न च भृत्यवर्गे
दीने दयां न कुरुते न च बन्धुवर्गे ।
तस्य जीवितफलेन किम्
काको ऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते ॥

४. येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूता:
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

५. माता न स्यात् पिता वयम् एव स्युः
तौ न तप्तं वयम् एव तप्ताः ।
गेहे न धान्यं वयम् एव खादामः
वृद्धौ न जीर्णौ वयम् एव जीर्णाः ॥

६. येषां विवादाय धनं मदाय
दानं परेषां परपीडनाय ।
ज्ञानं रजोर्ध्वं परतस्तमः स्याद्
ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥

# द्वात्रिंशः पाठः

## कथा

### स्वामिभक्ता चात्रा

यदा महाराजः सिंहगामसिंहः स्वर्गम् अगच्छत् तदा तस्य ज्येष्ठः पुत्रः नृसिंहबलेन राज्यं अधिकृतवान्। परम् सः अधार्मिकः आलसः च आसीत्। सामन्ताः तम् राजासनात् अपसारितवन्तः। उदयसिंहः कनिष्ठः कुमारः उदयसिंहः तावत् शिशुः एव आसीत्। दायित्वम् [illegible] शिशोः संरक्षकः अभवत्। सः एव सर्वाणि [illegible]।

अनन्तरम् नृसिंहस्य राज्यलाभः उदगच्छत्। सः एकदा निशीथे [illegible] निर्गमाद्वारम् अवलोक्य अहसत्। कारणम् सेवकः [illegible] यत् उदयसिंहस्य चात्रीम् धन्याम् अवोचयत्। सा च शीघ्रम् [illegible] उदयसिंहम् कलकरण्डकाधाम् निधाय, ताम् च गृहीत्वा सरितायाः तटे प्रतीक्षितुं भृत्यम् अपाठयत्। सः अपि ताम् करण्डकाम् गृहीत्वा सत्वरम् नदीतटम् प्रातिष्ठत। चात्री च तदा महदाश्चर्यम् विपक्षम् राजाज्ञायाः पर्यङ्कः न्यवर्तयत्। अपि च एव कृपाणम् आदाय राजप्रासादम् अपावरात्। अपृच्छत् च 'कुत्र अस्ति उदयसिंहः?' इति। सा च हृदयं पाषाणसमम् विधाय कामपि करुणां संकेतम् अकरोत्।

एकेन एव प्रहारेण बलवीरः शिशोः द्वे खण्डे अकरोत्। निरगच्छत् च सत्वरम् एव। चात्री च पुत्रस्य शवम् क्रोडे [illegible] निधाय नदीतटम् अगच्छत् तम् च तत्र जले न्यधात्यत्। इत्थम् सा स्वामिभक्ता धन्या स्वपुत्रं पारत्यज्य स्वामिसुतम् अरक्षत्। काले गते उदयसिंहः युवा अभवत्। सः बलवीरम् अदण्डयत्। चात्रीं च ताम् अपूजयत्। ततः सः चिरम् सुखेन प्रजाः अपालयत्।

धन्या सा स्वामिभक्ता धन्या या स्वपुत्रम् दत्त्वा स्वामिसुताम् अरक्षत्।

### अभ्यासः

१. अर्थशब्दः —

| | |
|---|---|
| चात्रिः | धाय |
| अपसारितवन्तः | हटा दिया |
| शयानम् | सोते हुये को |
| करण्डकाम् | डलिया |
| निधाय | रख कर |
| भृत्यम् | नौकर |
| पर्यङ्कः | पलंग |

त्रयोदशः पाठः

## वर्णाः तेषाम् उच्चारणस्थानानि च

गुरुः — हे शिष्य संस्कृते कति वर्णाः सन्ति ?

शिष्यः — गुरो ! संस्कृते एकत्रिंशत् वर्णाः सन्ति । त्रयोदश स्वराः, पञ्चविंशतिः व्यञ्जनानि च । व्यञ्जनेषु पञ्चविंशतिः स्पर्शाः, चत्वारः अन्तस्थाः, चत्वारः ऊष्माणः, क्ष त्र ज्ञ श्र च ।

गुरुः — हे शिष्य ! स्वराणाम् किम् लक्षणम् अस्ति ?

शिष्यः — स्वं राजन्ते इति स्वराः । तेषाम् वर्णानाम् उच्चारणम् स्वयमेव भवति । एतेषु 'अ, इ, उ, ऋ, ऌ' इति पञ्च ह्रस्वस्वराः । आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ इति अष्टौ दीर्घस्वराः ।

गुरुः — भो शिष्य ! व्यञ्जनानि कति सन्ति ?

शिष्यः — एषाम् वर्णानाम् उच्चारणम् स्वरैः सह भवति । तानि व्यञ्जनानि निगदन्ति ।

ते क्रमेण इत्थं सन्ति —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कवर्गः | क् | — | क | ख | ग | घ | ङ |
| चवर्गः | च् | — | च | छ | ज | झ | ञ |
| टवर्गः | ट् | — | ट | ठ | ड | ढ | ण |
| तवर्गः | त् | — | त | थ | द | ध | न |
| पवर्गः | प् | — | प | फ | ब | भ | म |
| अन्तस्थाः | | — | य | र | ल | व | |
| ऊष्माणः | | — | श | ष | स | ह | |

अनुस्वारः = ं , विसर्गः (:) ।

गुरुः — हे वत्स ! एषाम् वर्णानाम् उच्चारण-स्थानानि यदि वर्णय ।

शिष्यः — हे गुरो ! वर्णानाम् उच्चारण स्थानानि यथा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

# ग्रंथ ∩ (१)
## व्याकरण – परिचय

**व्याकरण :–** व्याकरण वह शास्त्र है जो हमें शुद्ध भाषण करने तथा शुद्ध लिखने का ज्ञान कराता है।

**वर्ण :–** वर्ण उस छोटी से छोटी ध्वनि को कहते हैं, जिस के और खंड न हो सकें।

वर्ण माला

स्वर { अ, इ, उ, ऋ, ऌ — ह्रस्व स्वर
आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ — दीर्घ स्वर

व्यंजन :–

स्पर्श –
कवर्ग (=क) – क ख ग घ ङ
चवर्ग (=च) – च छ ज झ ञ
टवर्ग (=ट) – ट ठ ड ढ ण
तवर्ग (=त) – त थ द ध न
पवर्ग (=प) – प फ ब भ म

अंतस्थ – य र ल व

ऊष्म – श ष स ह

अयोगवाह – ं (अनुस्वार), ः (विसर्ग).

### उच्चारण स्थान

पृष्ठ ८६

| उच्चारण स्थान | स्वर | व्यंजन | | |
|---|---|---|---|---|
| | | स्पर्श | अंतस्थ | ऊष्म |
| कंठ | अ, आ | क ख ग घ ङ | – | ह, (:) |
| तालु | इ, ई | च छ ज झ ञ | य | श |
| मूर्धा | ऋ, ॠ | ट, ठ, ड, ढ, ण | र | ष |
| दन्त | ऌ | त थ द ध न | ल | स |
| ओष्ठ | उ, ऊ | प फ ब भ म | – | – |
| कंठतालु | ए, ऐ | – | – | – |
| कंठौष्ठ | ओ, औ | – | – | – |
| दन्तौष्ठ | – | – | व | – |
| नासिका | – | ं (अनुस्वार) | | |

## कारक

कारक :- वाक्य में जिस के साथ क्रिया का अन्वय होता है उसे कारक कहते हैं। जैसे 'बालकः पठति'। इस वाक्य में 'पठति' क्रिया का अन्वय 'बालकः' के साथ है। इस लिये बालकः कारक है। इसी प्रकार 'नृपः ब्राह्मणाभ्यः धनम् यच्छति' इस वाक्य में 'नृपः', 'ब्राह्मणाभ्यः' तथा 'धनम्' कारक हैं।

कारक छः होते हैं :—

१ - कर्ता, २ - कर्म, ३ - करण, ४ - सम्प्रदान, ५ - अपादान, ६ - अधिकरण।

नोट :- 'सम्बन्ध' तथा 'सम्बोधन' का क्रिया के साथ कोई अन्वय नहीं होता - जैसे रामस्य पुस्तकम् (राम की पुस्तक), हे राम! इस लिये 'सम्बन्ध' तथा 'सम्बोधन' कारक नहीं कहलाते।

विभक्ति :- जिन प्रत्ययों से वचन और कारक का बोध हो उसे विभक्ति कहते हैं। जैसे नरः = एक मनुष्य ने। नरौ = दो मनुष्यों ने। नराः = एक मनुष्यों ने।

विभक्तियां सात होती हैं :—

१ - प्रथमा, २ - द्वितीया, ३ - तृतीया, ४ - चतुर्थी, ५ - पञ्चमी, ६ - षष्ठी, ७ - सप्तमी।

| | कारक | विभक्ति | ने, को, से, के लिये, से, का, के, की, में, पर, हे, अरे |
|---|---|---|---|
| १. | कर्ता | प्रथमा | ने, |
| २. | कर्म | द्वितीया | को |
| ३. | करण | तृतीया | से, के द्वारा |
| ४. | सम्प्रदान | चतुर्थी | के लिये |
| ५. | अपादान | पञ्चमी | से |
| ६. | (सम्बन्ध) | षष्ठी | का, के, की |
| ७. | अधिकरण | सप्तमी | में, पर |
| ८. | (सम्बोधन) | प्रथमा | हे, अरे |

## वचन

संस्कृत में तीन वचन होते हैं :—

१ - एकवचन, २ - द्विवचन, ३. बहुवचन.

एक के लिये एकवचन का प्रयोग होता है। जैसे - बालः गच्छति।
दो के लिये द्विवचन का प्रयोग होता है। जैसे — बालौ गच्छतः।
तीन तथा उस से अधिक के लिये बहुवचन का प्रयोग होता है।
जैसे बालाः गच्छन्ति।

शब्द रूप

बाल (= बालक)

अकारान्त पुंल्लिङ्ग

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| कर्ता – प्रथमा | बालः | बालौ | बालाः |
| कर्म – द्वितीया | बालम् | बालौ | बालान् |
| करण – तृतीया | बालेन | बालाभ्याम् | बालैः |
| सम्प्रदान – चतुर्थी | बालाय | बालाभ्याम् | बालेभ्यः |
| अपादान – पञ्चमी | बालात् | बालाभ्याम् | बालेभ्यः |
| सम्बन्ध – षष्ठी | बालस्य | बालयोः | बालानाम् |
| अधिकरण – सप्तमी | बाले | बालयोः | बालेषु |
| सम्बोधन | हे बाल! | हे बालौ! | हे बालाः! |

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

| | | | |
|---|---|---|---|
| कर्ता – प्रथमा | फलम् | फल | फलानि |
| कर्म – द्वितीया | फलम् | फल | फलानि |

(देव बाल की तरह).

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

बाला (= लड़की)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | बाला | बाले | बालाः |
| द्वितीया | बालाम् | " | " |
| तृतीया | बालया | बालाभ्याम् | बालाभिः |
| चतुर्थी | बालायै | " | बालाभ्यः |
| पञ्चमी | बालायाः | " | " |
| षष्ठी | " | बालयोः | बालानाम् |
| सप्तमी | बालायाम् | " | बालासु |
| सं० | हे बाले! | हे बाले! | हे बालाः! |

इकारान्त पुंल्लिङ्ग

मुनि

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | मुनिः | मुनी | मुनयः |
| द्वितीया | मुनिम् | " | मुनीन् |
| तृतीया | मुनिना | मुनिभ्याम् | मुनिभिः |
| चतुर्थी | मुनये | " | मुनिभ्यः |
| पञ्चमी | मुनेः | " | " |
| षष्ठी | " | मुन्योः | मुनीनाम् |
| सप्तमी | मुनौ | " | मुनिषु |
| सं० | हे मुने! | हे मुनी! | हे मुनयः! |

3 कारान्त पुंल्लिङ्ग

साधु (= साधक पुरुष)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | साधुः | साधू | साधवः |
| द्वितीया | साधुम् | साधू | साधून् |
| तृतीया | साधुना | साधुभ्याम् | साधुभिः |
| चतुर्थी | साधवे | " | साधुभ्यः |
| पञ्चमी | साधोः | " | साधुभ्यः |
| षष्ठी | साधोः | साध्वोः | साधूनाम् |
| सप्तमी | साधौ | " | साधुषु |
| सं० | हे साधो! | हे साधू! | हे साधवः! |

ई कारान्त नपुंसकलिङ्ग

नदी (= नदि)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | नदी | नद्यौ | नदीनि |
| द्वितीया | नदीम् | " | " |
| तृतीया | नद्या | नदीभ्याम् | नदीभिः |
| चतुर्थी | नद्यै | " | नदीभ्यः |
| पञ्चमी | नद्याः | " | " |
| षष्ठी | नद्याः | नद्योः | नदीनाम् |
| सप्तमी | नद्याम् | " | नदीषु |
| सं० | हे नदि! | हे नद्यौ! | हे नदीनि! |

ऊ कारान्त नपुंसकलिङ्ग

वारि (= जल)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | वारि | वारिणी | वारीणि |
| द्वितीया | वारि | " | " |
| तृतीया | वारिणा | वारिभ्याम् | वारिभिः |
| चतुर्थी | वारिणे | " | वारिभ्यः |
| पञ्चमी | वारिणः | " | " |
| षष्ठी | वारिणः | वारिणोः | वारीणाम् |
| सप्तमी | वारिणि | " | वारिषु |
| सं० | हे वारि! | हे वारिणी! | हे वारीणि! |

ऊ कारान्त नपुंसकलिङ्ग

दधि (= दही)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | दधि | दधिनी | दधीनि |
| द्वितीया | " | " | " |
| तृतीया | दध्ना | दधिभ्याम् | दधिभिः |
| चतुर्थी | दध्ने | " | दधिभ्यः |
| पञ्चमी | दध्नः | " | " |
| षष्ठी | " | दध्नोः | दधीनाम् |
| सप्तमी | दधनि, दध्नि | " | दधिषु |
| सं० | हे दधि! हे दधे! | हे दधिनी! | हे दधीनि! |

अस्मद्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | अहम् | आवाम् | वयम् |
| द्वितीया | माम् | " | अस्मान् |
| तृतीया | मया | आवाभ्याम् | अस्माभिः |
| चतुर्थी | मह्यम् | " | अस्मभ्यम् |
| पञ्चमी | मत् | " | अस्मत् |
| षष्ठी | मम | आवयोः | अस्माकम् |
| सप्तमी | मयि | " | अस्मासु |

युष्मद्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | त्वम् | युवाम् | यूयम् |
| द्वितीया | त्वाम् | युवाम् | युष्मान् |
| तृतीया | त्वया | युवाभ्याम् | युष्माभिः |
| चतुर्थी | तुभ्यम् | " | युष्मभ्यम् |
| पञ्चमी | त्वत् | " | युष्मत् |
| षष्ठी | तव | युवयोः | युष्माकम् |
| सप्तमी | त्वयि | " | युष्मासु |

---

तिङन्त

काल

संस्कृत में तीन काल होते हैं :—

1 — भूतकाल
2 — वर्तमान काल
3 — भविष्यत काल

भूतकाल के लिये लङ् लकार का प्रयोग होता है।
वर्तमान काल के लिये लट् लकार का प्रयोग होता है।
भविष्यत काल के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है।
इस के अतिरिक्त आज्ञा आदि के अर्थ में लोट् लकार, और आशीर्वाद आदि के अर्थ में विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

पुरुष

तीन पुरुष होते हैं —

1 - प्रथम पुरुष
2 - मध्यम पुरुष
3. उत्तम पुरुष

प्रत्येक पुरुष में तीन तीन वचन होते हैं। एकवचन द्विवचन तथा बहुवचन।

संस्कृत में तीनों लिङ्ग के लिये एक ही क्रिया का प्रयोग होता है।

धातु रूप

स्वादि गण — पठ् = पढ़ना

लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रत्यय

| * पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | ति | तः | न्ति |
| मध्यम पुरुष | सि | थः | थ |
| उत्तम पुरुष | मि | वः | मः |

लट् लकार के रूप

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पठति | पठतः | पठन्ति |
| मध्यम पुरुष | पठसि | पठथः | पठथ |
| उत्तम पुरुष | पठामि | पठावः | पठामः |

लङ् लकार (भूतकाल) के प्रत्यय

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | त् | ताम् | अन् |
| मध्यम पुरुष | : | तम् | त |
| उत्तम पुरुष | अम् | आव | आम |

लङ् लकार के रूप

विशेष :- लङ् लकार धातु से पहले अ जोड़ा जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | अपठत् | अपठताम् | अपठन् |
| मध्यम पुरुष | अपठः | अपठतम् | अपठत |
| उत्तम पुरुष | अपठम् | अपठाव | अपठाम |

लोट् लकार के प्रत्यय

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | तु | ताम् | अन्तु |
| मध्यम पुरुष | - | तम् | त |
| उत्तम पुरुष | आनि | आव | आम |

लोट् लकार के रूप

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पठतु | पठताम् | पठन्तु |
| मध्यम पुरुष | पठ | पठतम् | पठत |
| उत्तम पुरुष | पठानि | पठाव | पठाम |

विधि लिङ् के प्रत्यय

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | एत् | एताम् | एयुः |
| मध्यम पुरुष | एः | एतम् | एत |
| उत्तम पुरुष | एयम् | एव | एम |

अस्मद्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | अहम् | आवाम् | वयम् |
| द्वितीया | माम् | " | अस्मान् |
| तृतीया | मया | आवाभ्याम् | अस्माभिः |
| चतुर्थी | मह्यम् | " | अस्मभ्यम् |
| पञ्चमी | मत् | " | अस्मत् |
| षष्ठी | मम | आवयोः | अस्माकम् |
| सप्तमी | मयि | " | अस्मासु |

युष्मद्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | त्वम् | युवाम् | यूयम् |
| द्वितीया | त्वाम् | युवाम् | युष्मान् |
| तृतीया | त्वया | युवाभ्याम् | युष्माभिः |
| चतुर्थी | तुभ्यम् | " | युष्मभ्यम् |
| पञ्चमी | त्वत् | " | युष्मत् |
| षष्ठी | तव | युवयोः | युष्माकम् |
| सप्तमी | त्वयि | " | युष्मासु |

## तिङन्त

### काल

संस्कृत में तीन काल होते हैं :—

1 — भूतकाल
2 — वर्तमान काल
3 — भविष्यत काल

भूतकाल के लिये लङ् लकार का प्रयोग होता है।
वर्तमान काल के लिये लट् लकार का प्रयोग होता है।
भविष्यत काल के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है।
इन के अतिरिक्त प्रायः आशीर्वाद के अर्थ में लोट् लकार, प्रार्थना के अर्थ में विध्यर्थ लिङ् का प्रयोग होता है।

### पुरुष

तीन पुरुष होते हैं :— 1 - प्रथम पुरुष
2 - मध्यम पुरुष
3. उत्तम पुरुष

प्रत्येक पुरुष में तीन तीन वचन होते हैं। एकवचन द्विवचन तथा बहुवचन।

संस्कृत में तीन लिङ् के लिये एक ही क्रिया का प्रयोग होता है।

धातु रूप

स्वादि गण — पठ् = पढ़ना

लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रत्यय

| * पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | ति | तः | न्ति |
| मध्यम पुरुष | सि | थः | थ |
| उत्तम पुरुष | मि | वः | मः |

लट् लकार के रूप

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पठति | पठतः | पठन्ति |
| मध्यम पुरुष | पठसि | पठथः | पठथ |
| उत्तम पुरुष | पठामि | पठावः | पठामः |

लङ् लकार (भूतकाल) के प्रत्यय

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | त् | ताम् | न् |
| मध्यम पुरुष | : | तम् | त |
| उत्तम पुरुष | म् | व | म |

लङ् लकार के रूप

टिप्पणी :- लङ् लकार धातु से पहले अ जोड़ा जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | अपठत् | अपठताम् | अपठन् |
| मध्यम पुरुष | अपठः | अपठतम् | अपठत |
| उत्तम पुरुष | अपठम् | अपठाव | अपठाम |

लोट् लकार के प्रत्यय

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | तु | ताम् | अन्तु |
| मध्यम पुरुष | – | तम् | त |
| उत्तम पुरुष | आनि | आव | आम |

लोट् लकार के रूप

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पठतु | पठताम् | पठन्तु |
| मध्यम पुरुष | पठ | पठतम् | पठत |
| उत्तम पुरुष | पठानि | पठाव | पठाम |

विध्यर्थ लिङ् के प्रत्यय

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | एत् | एताम् | एयुः |
| मध्यम पुरुष | एः | एतम् | एत |
| उत्तम पुरुष | एयम् | एव | एम |

## पठ् धातु के रूप

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पठति | पठतः | पठन्ति |
| मध्यम पुरुष | पठसि | पठथः | पठथ |
| उत्तम पुरुष | पठामि | पठावः | पठामः |

### लृट् लकार (भविष्यत् काल) के प्रत्यय

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | स्यति | स्यतः | स्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | स्यसि | स्यथः | स्यथ |
| उत्तम पुरुष | स्यामि | स्यावः | स्यामः |

### लृट् लकार के रूप

टिप्पणी :- इस लकार में कुछ धातुओं में प्रत्यय से पहले 'इ' जोड़ दिया जाता है और इसी कारण से स्यति का इष्यति हो जाता है, जैसे पठ + इ + ष्यति = पठिष्यति। ऐसी धातुओं को लिट् धातुयें कहते हैं। जिन धातुओं में प्रत्यय से पहले 'इ' नहीं जोड़ा जाता उन्हें सार्वधातुक धातु कहते हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पठिष्यति | पठिष्यतः | पठिष्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | पठिष्यसि | पठिष्यथः | पठिष्यथ |
| उत्तम पुरुष | पठिष्यामि | पठिष्यावः | पठिष्यामः |

पत्, ~~[illegible]~~, स्मर्, क्रीड्, वद्, चर्, हस्, चल्, रक्षाद्, मृ (मर्), स्मर्, ध्याय्, रक्ष्, भ्रम्, इत्यादि धातुओं के रूप भी लट्, इत्यादि लकारों में पठ् धातु की तरह ही जानने चाहिये।

कुछ धातु रुद हैं जो लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् में बदल जाते हैं। जैसे गम् को गच्छ्, या को यच्छ्, दृश् को पश्य्, इत्यादि हो जाता है। किन्तु लृट् लकार में धातु अपने मूलरूप में ही रहती है। इन धातुओं के प्रथम पुरुष एकवचन के रूप सभी लकारों में दिये जाते हैं।

| धातु | लट् | लङ् | लोट् | विधिलिङ् | लृट् |
|---|---|---|---|---|---|
| गम् - गच्छ् | गच्छति | अगच्छत् | गच्छतु | गच्छेत् | गमिष्यति |
| या - यच्छ् | यच्छति | अयच्छत् | यच्छतु | यच्छेत् | यास्यति |
| तिष्ठ् - तिष्ठ् | तिष्ठति | अतिष्ठत् | तिष्ठतु | तिष्ठेत् | स्थास्यति |
| दा - यच्छ् | यच्छति | अयच्छत् | यच्छतु | यच्छेत् | दास्यति |
| दृश् - पश्य् | पश्यति | अपश्यत् | पश्यतु | पश्येत् | द्रक्ष्यति |

## तुदादिगण

तुदादिगण में सभी धातु प्रायः परस्मैपद के रूप में प्रयुक्त होते हैं। केवल इतना है, कि जहां भ्वादिगण का धातु प्रयुक्त अन्तिम तथा अन्तिम वर्ण से पहले प्रयुक्त होते हैं 'इ' 'उ' तथा ऋ को य, व् तथा र् हो जाता है, वहां तुदादिगण में ऐसा नहीं होता। उदाहरण के लिए जि + य + ति ⟹ जे + य + ति ⟹ जय् + य + ति = जयति। परन्तु तुद् + य + ति = तुदति

तुद् = दुःख देना

लट् लकार

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | तुदति | तुदतः | तुदन्ति |
| मध्यम पुरुष | तुदसि | तुदथः | तुदथ |
| उत्तम पुरुष | तुदामि | तुदावः | तुदामः |

लृट् लकार

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | तोत्स्यति | तोत्स्यतः | तोत्स्यन्ति |
| म० पु० | तोत्स्यसि | तोत्स्यथः | तोत्स्यथ |
| उ० पु० | तोत्स्यामि | तोत्स्यावः | तोत्स्यामः |

लिख्, क्षिप्, मिल्, स्पृश्, इष् (इच्छा), पच् (पचन), भ्रमाद् — तुदादिगण के — अन्य धातुओं के रूप भी इसी प्रकार जानने चाहिए।

## दिवादिगण

दिवादिगण में 'य' विकरण पाया है जैसे नृत् + य + ति = नृत्यति, नृत् + य + ति = नृत्यति, नश् + य + ति = नश्यति

# Syllabus in SANSKRIT

## Class VI

1. वर्णोच्चार, अक्षरों तथा मात्राओं का पूर्ण ज्ञान। अक्षरों को अलग-अलग लिखना, पढ़ना।

2. स्वरान्त शब्दों के रूप सब कारकों में :—
   (1) अकारान्त - पुल्लिंग और नपुंसकलिंग में।
   (2) इकारान्त और उकारान्त पुं० और स्त्री० में।
   (3) आकारान्त स्त्रीलिंग में।

3. सर्वनाम (1) सर्व, तत्, किम्, अद् पुं० व नपुं० में।
   (2) अस्मद् और युष्मद्।

4. बीस तक गिनना वाचक शब्दों का साधारण ज्ञान।

5. क्रियाएँ, क्रियाएँ, सकर्मक अकर्मक आदि गुणों को मुख्यतया, सरल धातुओं के रूप लट्, लृट्, लोट् और लङ् लिखना।

6. मुख्य में प्रयुक्त होने वाले धातुओं के रूप—
   पठ्, गम्, अस्, दा, धा, हन्, लिख्।

7. सरल उपसर्गों को धातुओं के साथ प्रयोग।

8. सरल धातुओं के रूप, अर्थ, प्रयोगों का प्रयोग।

9. इन उपयोगी शब्दों का प्रयोग :— पुत्र, नेत्र, मित्र, कथा, नदी, कमल, कदा, तदा, यदा, यद्, यत्र, एक, द्वि, त्रि, चतुर, पञ्च।

10. सरल सरित संस्कृत पद्यों का शुद्ध उच्चारण युक्त कण्ठपाठ (Recitation)।

11. कुछ सुभाषित और सूक्तियों का कण्ठस्थ करना।

12. सरल हिन्दी से संस्कृत में तथा सरल संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद।

नोट :— इस श्रेणी के लिये एक सेट दो पुस्तकों का पाठ्य पुस्तक विभाग की ओर से अगले दिये जाने वाले क्रम के अनुसार पाठ्य विषय, व्याकरण तथा अनुवाद के लिये। क्रमवार दो व्याकरण की पूरक पुस्तकें होंगी। इस श्रेणी में पढ़ाये गये व्याकरण का विषय पाठ्य पुस्तक में पढ़ाये जाने वाले अंश में तथा पूरक पुस्तक के अंश में विषय के आधार पर लिया जावे।